ढेलामारू

हल्बी की हास्य – व्यंग्य रचनाएँ

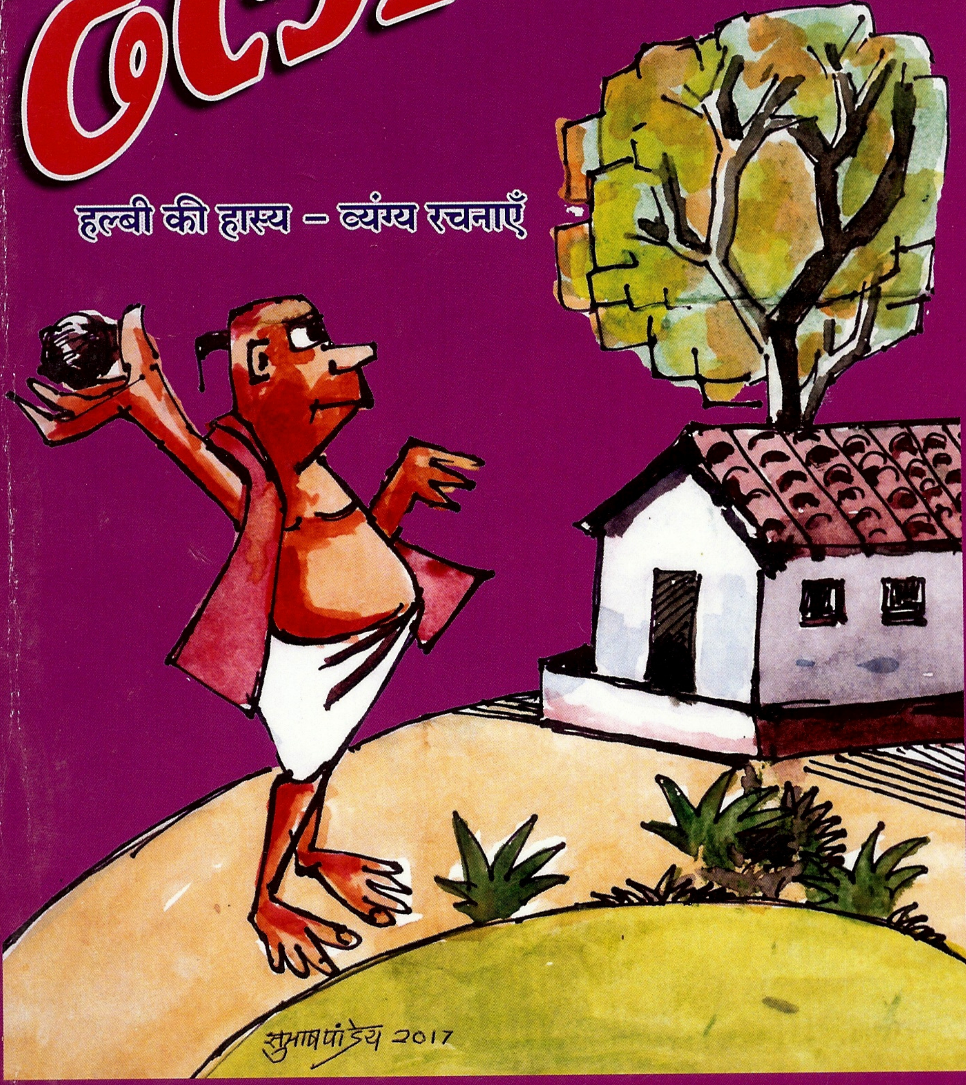

रुद्र नारायण पाणिग्राही

जगदलपुर

ढेलामारू

हल्बी की हास्य - व्यंग्य रचनाएं

रूद्र नारायण पाणिग्राही
भैरमदेव वार्ड 04
जगदलपुर
मो. 94252 61457
Email: rudranarayanpanigrahi@gmail.com

ढेलामारू

पुस्तक का नाम

ढेलामारू

लेखक

रूद्र नारायण पाणिग्राही

प्रकाशन वर्ष

जून 2017

संस्करण

प्रथम संस्करण 2017

मूल्य

100 रू.

टाइप सेटिंग

पारितोष पाणिग्राही

आवरण

पारितोष पाणिग्राही

मुखपृष्ठ आरेखन

सुभाष पाण्डेय

प्रकाशक

आर्यन कम्प्यूटर

पावर हाउस रोड, जगदलपुर 494001

कापीराइटः समस्त अधिकार लेखक के पास सुरक्षित है ।

और दुर्ग जिलों में आबाद हल्बा परिवारों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को आत्मसात् कर लिया है। मध्य प्रदेश के जिलों में आबाद हल्बा समाज पर बुन्देलखंड और महाराष्ट्र का मिला जुला प्रभाव परिलक्षित होता है। महाराष्ट्र में स्थापित हल्बा समाज पर महाराष्ट्र की संस्कृति ने अपनी छाप छोड़ी है और ओड़िसा में प्रस्थापित हल्बा परिवार, उत्कल संस्कृति से संयुक्त हो गये हैं। फिर भी रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, बोल–चाल, अलंकरण, लोक–साहित्य, लोक–संगीत उनका सब कुछ स्थानीयता से प्रेरित–प्रभावित होने के बावजूद, उनका हल्बापन उनके कई सामाजिक रीति–रिवाजों में सुरक्षित मिलता है। परन्तु 'नृ–विज्ञान' की दृष्टि में बस्तर अंचल की हल्बा जनजाति अपना अलग ही स्थान रखती है। बस्तर अंचल में तो अवधी, भोजपुरी, मराठी आदि भाषा बोलने वालों विभिन्न भाषाई, वे परिवार, जो पिछले अनेक पीढ़ियों से इन आदिम जन–जातियों के क्षेत्रों में स्थाई रूप से बस गये हैं, अपने घरों में और बाहर भी अब हल्बी या भतरी जैसे क्षेत्रीय बोलियाँ बोलते पाये जाते हैं। यहाँ तक कि द्रविड़ परिवार की गोण्डी बोली बोलने वालों को भी हल्बी का प्रयोग करते देखा जा सकता है।

हल्बी में लिखित साहित्य का अभाव नहीं है। हल्बी रचनाकारों ने सभी विधाओं में लिखा है और खूब लिखा है । कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, व्यंग्य, नाटक व अन्य विधाओं में बस्तर के रचनाकारों की सशक्त रचनाएं समय–समय पर प्रकाशित और प्रसारित होती रहीं हैं । हल्बी में मौलिक लेखन के अलावा आँचलिक लेखन का कार्य भी हुआ है। आँचलिक लेखन कार्य के लिए हल्बी साहित्य में प्रारंभिक दौर के रचनाकारों से लेकर नयी पीढ़ी के रचनाकारों तक एक लंबी फेहरिस्त है, भिन्न–भिन्न विधाओं में लिखी हुई रचनाएँ समय–समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में

प्रकाशित होते रहे हैं, हल्बी के अतिरिक्त, बस्तर अंचल की अन्य बोलियों– भतरी, गोण्डी, दोरली की भी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । बस्तर की अन्य आँचलिक बोली–भाषाओं में भले ही अब तक अधिक लिखित साहित्य प्रकाशित न हो पाए हों, किन्तु उनका महत्व भी कम नहीं है ।

'ढेलामारू', हल्बी का एक शब्द है जिसका अर्थ है, ढेला मारने वाला अर्थात् ढेला फेंकने वाला। किसी एक विषय पर पत्थर उछालना अथवा ढेला फेंकना और उस पर कलम चलाना या विचार अभिव्यक्त करना ही ढेलामारू शब्द की सार्थकता को प्रदान करता है। मैंनें व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से अपने आस–पास, समाज अथवा गाँवों में घटित होने वाली घटनाओं–सच्चाइयों को ही लेखन का विषय बनाया।

हल्बी में हास्य–व्यंग्य विधा में रचनाएं कम लिखी गई हैं। हल्बी में हास्य–व्यंग्य लिखना बहुत ही कठिन विधा है। 90 की दशक में दण्डकारण्य समाचार तथा बस्तरिया नामक स्थानीय अखबारों में हल्बी की व्यंग्य रचनाएं प्रकाशित होती थी, यदा–कदा आज भी कुछ रचनाएं प्रकाशित होती आ रही हैं । उन दिनों सुभाष पाण्डेय जी अटपहरिया के नाम से "डूमा कहनी" और मैंनें "ढेलामारू" के नाम से स्तम्भ लिखना प्रारंभ किया था, जो लगभग तीन वर्षों तक सतत् प्रकाशित होती रही । कभी–कभी कुछ हल्बी की रचनाएं बंशीलाल श्रीवास्तव जी के भी, पढ़ने मिल जाया करती थी। हल्बी के पाठकों ने **डूमा कहनी** और **ढेलामारू** दोनों स्तम्भों को भरपूर सराहा। हल्बी के प्रसिद्ध साहित्यकार लाला जगदलपुरी जी को भी **ढेलामारू** शीर्षक इतना पसंद आया कि उन्होनें सांध्यकालीन भ्रमण के दौरान मुझे रास्ते पर रोककर, लेखन के लिए मेरी तारीफ की और व्यंग्य लेखन के लिए प्रोत्साहित भी किया था। निःसंदेह साप्ताहिक स्तम्भ के लिए विविध विषयों का चयन करना और

उस पर हास्य– व्यंग्य से भरपूर रचनाओं को गढ़ना कठिन कार्य था। मैं चाहता था कि आगे भी स्तम्भ लिखता रहूँ किन्तु छोटे भाई के कीडनी ट्रांसप्लांट के सिलसिले में मुझे लंबे समय तक हैदराबाद में रहना पड़ा। आपरेशन की विवशता ने मुझे आगे लिखने ना दिया। प्रकाशित जितनी भी रचनाएं थी उसे, साबूत बिना कटिंग के अखबारों के रूप में जमा करता रहा। कभी फुरसत में प्रकाशित आलेखों को कटिंग करके सुरक्षित कर लूंगा, किन्तु एक दिन गल्ती या कहें कि लापरवाही के कारण पुराने अखबार समझ कर सारे प्रकाशित अंकों को रद्दी में डाल दिया । मेहनत पर सारा पानी फिर गया। उस दौरान कम्प्यूटर भी हमारे पास नहीं होते थे। तीन वर्षों में जो कुछ भी लिखा, सब कुछ हाथ से निकल गया। आज लिखने का मूड नहीं बन पाता, किन्तु जो कुछ भी इस समय आपके हाथों में है, वह भूले–बिसरे लेखन का नमूना भर है, उन दिनों के लेखन का। इस पुस्तक में अधिक आलेख नहीं हैं किन्तु जो कुछ भी है हल्बी के मुहावरों को रचनाओं का शीर्षक बना कर लिखने का प्रयास किया है। पाठकों के हाथों में हास्य–व्यंग्य की जो भी रचनाएं बन पाई, अवश्य ही गुदगुदाएगीं।

बस्तर की भाषा–बोलियों के संरक्षण संवर्धन के लिए बस्तर के प्रत्येक रचनाकारों, साहित्यकारों और कलाकारों को सामने आना होगा और बस्तर की विलक्षण संस्कृति और साहित्य के संरक्षण–संवर्धन के लिए कारगर उपाय करने होगें। बस्तर में सांस्कृतिक–साहित्यिक गतिविधियों के लिए रचनात्मक कार्य हों, जिससे बस्तर की साहित्यिक एवं संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन को बल मिलेगा। इन सभी कार्यों के लिए प्रत्येक बस्तरवासियों का सहयोग अपेक्षित है।

हम उन सभी सज्जनों के आभारी हैं, जिन्होंने बस्तर की

स्थानीय बोली के इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया है। पुस्तक आप सुधि पाठकों के हाथ में है, संकलित हास्य–व्यंग्य के रचनाओं को पढ़ने के बाद पाठकों को ऐसा प्रतीत होता है कि बस्तर में साहित्य प्रकाशन की एक और विधा व्यंग्य रचनाओं के रूप में स्पंदित हुआ है, तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयास सफल हुआ। आप पाठकों की समीक्षा से हमें और आगे बढ़कर कार्य करने हेतु मार्गदर्शन एवं संबल प्राप्त होगा, यही अपेक्षा है ।

रूद्र नारायण पाणिग्राही
भैरमदेव वार्ड, जगदलपुर
मो0 94252 61457

हाती हिंगसा

दिन बुड़ेसे, रात पायेसे आउर फेर बेर आपलो उदिया बेर ने उदेसे आउर बिहान पायेसे। असने सोमार ले धरून सनवार दिन जितली जाले, एयेसे रयबार। एदे गेलो रयबार दिन चो गोठ आय, इसु इन्दर राजा चो परताब ने आउर मांय लखि चो परताब ने उक्ताय बस्तर राज चो खेतेयार भाई मन चो मुंहु उजर होलि से । मुंहु उजर चो गोठ बल्ले सबय बाटे मुंडा-खाड़ा, गभार-टिकरा, बेड़ा, बाड़ि आउर सड़ार-ओड़ार मन ने सोरा आना बल्ले,... चार बूंद धान बले आसे, आउर पानी-कांजी चो बले कन्ताल निहांय। रलो भायगमानी मन जोखा दखुन-दखुन बिसर-दांदर आउर सोड़ेया मन के रोपुन भाती, एसु दुय-चार पहार चो पुड़गा-पुड़गी काजे मछरी-सुकसी चो इन्तिजाम बले बनालासत।

एसु नाई, परू नाई "हाती हिंगसा बिलई करे आउर काटा हरजुन मरे" बल्लो धांई कोलेया राउत घरो मानसाय संमदी मन संगे आमि बले, बांवस मुंडा ने मछरी जोखा बनाउन रलूं आउर रोज्जे बिहाने, आउर सांज बेरा-बेरा साग पुरती ढुटक-ढुटक आनुं चे।

गेलो रयबार दिन काय होलि, मानसाय संमदीमन चो मने पाप जनमली कायनूं। कुकड़ा बासु नी बासु भेंडेया, कोड़की के बोहलो, मछरी ढुटा के ओरालो आउर फेर बेर नी उदु-उदु काचो-काचो बिसर दांदर के फाफड़लो कि, ढुटायक अबगो तुरू, बामि आउर भाटा डगाउ मछरी संगे-संगे काकड़ा-काकड़ी के पय फाफडुन ढुटा चो मुंहटा के आदेन पान ने बांदुन कोड़की ढेटा ने ओराउन बोहुन दिलोसे आउर घर बाटे

फिरून एतो जोखा ने हरिक-हरिक हिंडेन्दे बलते रलो कि एसु ले फेर मंय तप्प के अमरले।

मके दखुन लाफी ले चे बलेसे- "राम-राम हो संमदी, आज बेर कसन बनालास? राति चो हांसा सिकार झटके नी जिरली काय हो, बेर ले सवलास?" बलतोके मंय बले संमदी के जोहार-बिहार बल्लो आउर, "आले डंडिक टाका आयं ...संगे जांवा" बलुन धकड़-धकड़ पेलना किंयारी ने जाउन सोड़ेयामन के एके फाफड़, हुनके फाफड़, जमाय पांच हातेया सोड़ेया मन के फाफडुन पकाले, ...मान्तर हुता मछरी तो मछरी, गोटोक मुंजी नाईं। चारखुटेया किंयारी चो बिसर टाटि के जाउन दखेसें तो हुताय पय छुचा। मुरूसनाय होले आउर छुचाय ढुटि के हाते धरून आपलो ठोटि कोड़की के डेबरी खांदे बोहुन ढुटि के हलाते बेड़ा के भंवरक नजराले आउर एते इले। लगे अमरतोके, "आले जातोर आय?...जों" बलुन, संमदी बले मोचो पाट-पाट बाट के धरला । पाठे पूरे होउन बेड़ा पारे-पार एते-एते संमदी काय बलेसे बे- "आजि जुगे नी पड़ला कायनूं संमदी ने ?.... कोलेया भिड़सत असन लागेसे हो । आजि आमचो बाटे बले फुसुरढुंग-फुसफास, बयहा मांझि घरो ढेकी ठड़गंस करली।"

मानसाय संमदी चो ठसका-मसका चो गोठ के सुनुन तो मोचो जिव के मिरी पिसुन लगड़लो असन लागली। मंय बल्ले "कोलेया नोहात संमदी, खंगार भिड़सत। दखानूं - कालि सांज बेरा उसने काचो तो बंस बुड़ली गुनुक, घर चो पोसलो हांसा के गोटोक ठटालु। आजि असने मछरी चो नाव ने गोटोक मुंजि नाईं ना काकड़ा नाईं। कोन बंसबुड़ा खंगार पयदलोसे जाले, आले कोनि दिने तो सपड़ेदे ? हुनचो बायले के तेल चेगायेन्दे, दखा जायदे साला के "- बलुन बलतोके के

संमदी, मुंहु चो पानी के सर्र के झिकुन दिला।...मँय अन्ताज करेंसे चे बे। गोठ के भुलकातो काजे, राउत चलाकी तो, धरा पड़ेन्दे बलुन काय बलेसे- “एदे हो संमदी, एई खंगारमन काय नोहात ?”, बलुन रान भीतर ले गोटोक मांई रूख के बोहुन तेरे-पेते, तेरे-पेते एतो बिता मुरिया दादि मन बाटे दखान काय बलसत बे- “दखासाहास संमदी इतरो-इतरो राखा-जागा चो इन्तिजाम होवलो ठाने पय नाकादार-दपेदार तो हेंवय जाओत, नेंजरमन बले ए खंगार मन चो डर काजे, ...कोन तो भिल भितरे ओलुन ओगाय आसोत। असन हाल चो चोरी करलो ने, दारू-पान बले मिरो बल्ले काहाँ ले मिरेदे ?”

हुनचो भुलकातो उवाट के मंय संमजले, आउर बल्ले- “तुमके निहाँय लाज, बस्तरेया होउन बस्तर चो रिति-रेवाज के बले नी जानास। सोजे बयला जिवलो घांई जियासाहास। तुमके काई चो सुद निहाँय? नेतानारिया मन दसराहा रथ काजे ‘मंगरमुंही’ नेसत।” बलतोके संमदी बले समंजला कि अदांय भुलकाउक नी होय बलुन। “असन आय जाले मंगरमुंही एकय बलुआत नें ? अछा होली ना सांगुन दिलास, नाहले मँय दारू खंगार मन आत बलुन रपट करूक जाते बे। आले मके बले खिंडीक भाटा अमराली से, घरे जायेंसे, तुमि धिरे-धिरे इया बलुन,” झपके-झपके आपलो घर चो बाट के धरून हिंडला। मँय फेर काय करते ता, मोचोय राखा-जागा नी करलो लागुन कोलेया असन भेंडेया भिड़लो। तेबे सियान मन बलुआत काना चो बड़गी हारक हाजुआय, ...दूसर खेप तो बड़गी के गोड़ तले चेपायदे, नोंहाय ?

चोरलो माल के दान्दर नापा

बरसा पानी चो आड़ा-तेड़ा ने एसु बरस काजे फेर आमचो मसागती किसान भाई मन ठगी होला। चार गाड़ा, छय गाड़ा बरसानी पावतो लोक मन सिरिप आंठ पोता, दस पोता ने मुंह मन के आंवसी होला। बेड़ा ने धान पाको नी पाको अयतवार हाट तो चुकतो बीती नोहांय। हाट चुकली कि, बूता फिटली बलुन जाना। टिंवस मुंडा चो सेस नी भरलो धान के गोड़े लगड़-लागड़ करून गपाएक दखा संगे मिसा-घसा करला आउर हुनी नंव बजे असन बासी भात के पोड़ालो सुकसी संगे गोटोक-गोटोक डोबला अल्टुन भाती, सोनाबाल चो सम्पत आउर खोड़सानार चो खोड़ेया, दुनों सारा भाटो कांवड़क-कांवड़क धान के बोहुन सरसरा अयतवार हाट चो बाट के धरला।

बाटे-घाटे जोखा दखुन-दखुन ...ठेट्ट हाट अमरला। ठान-ठान के काटा-पलवा के टांगुन लाल तुस चो कपड़ा चो झोरी मन ने खुदरा पयसा आउर डेबरी हात मन ने बरन-बरन चो नोट गड्डी मन के धरून कोचनेया मन, ...कांवड़ेया मन चो कांवड़ होओ कि, मुंड बोझा बीती मन चो मुंड बोझा के होओ - एथा आन, एबाटे आन, ए दादा काय आय? ए बोउ काय बोझा आय ? बलुन-बलुन बरपेला झिका-टाना करोत, आउर काटा मारून दस किलो के तीन किलो सांगुन, घुड़का-चमका करून आपलो मने पयसा के गपा-टुकना मन ने फिंगुन देओत। मन होले नेओत नाहले हुनचो सेती हुनी लगे बसुन रहोत।

मसगांव चो मसान डोकरी बिचारी पिंदलो सुन्दरमनी पाटा के दरकलो दखुन बेटा बीती के केंव तो जाउक दीली आउर सोनू मांझी

चो बुआरी बीती चो टेलीकाट छींट लुगा के पिंदलो के दखुन, असनी बीती लुगा के घेनले जाले मरतकाट ले पिन्देन्दे बलुन, ठवका खंडकेया गपा ने गपायक कान्दुल के कोठार ले चे सरकाउन भाती लहर-तहर हाटे बिकुक आनुन रली। बोपड़ी बिचारी डोकरी, एक तो तीन कोड़ी तीन बरख चो उमर, खिडींक आदक घाट रली बे ...नाहले मरत ले खंडक कान्दुल चो बोझ। दुनो कानपाटी आउर दुनों खाक बाटले कारी-नीरी पसना । पियास काजे अलगे टोडरा सुके। तरमर-तरमर होउन कान्दुल के बिकुक आनुन रली । बरमसेया सेठ हुनके सिरप दस उपरे चार, चवदा रूपिया के देउन काय बल्लो- "इनाम सुरी धरा आय बड़ाय । मंय चे आंय गुनुक धरेंसे .नाहले दूसर सेठ मन होले नी घेनता।" नवां कान्दुल, कोठार ले चोरून-लुकान आनलो बीती, केबे फेर सुरी धरली बे ? ...मान्तर चोर चो माल के दान्दर नापा। बल्लो घाईं मसान डोकरी काके फेर काय बलती ता ने ? ओगाय रूपिया के झोकली आउर चवदा रूपिया ने फेर टेलीकाट चो छींट बीती लुगा के काहां पावती ता, ...लोलो-बालो काजे काकनक पाकलो बीती भंयसा केरा, चार रूपिया चो आउर 'बेटा रले बुआरी आय, गाय रले दियारी आय बलुन', दियारी दिने खिचड़ी भात संगे कुमडा तो लागेदे चे बल्ली कायनूं आउर दस रूपिया देउन गोटोक पाकलो बीती गोल कुमडा के घेनुन एते इली ।

हेंव सम्पत मन सारा-भाटो तो दुय-दुय दिन काजे बले इसकुल जाउन रला। पढुक-लिखुक नी चे जानले बले आपलो-आपलो नांव के कोतकोताउक जानते रला। सहर-नंगर बड़े-छोटे लगे एउन जाउन कोचनेया मन चो झीका-टाना करतो चाल ओज के दखुन रला। बाटे-घाटे बोझा के नी उतराउन सीदा सोसायटी दुकाने आपलो-आपलो

कांवड़ के उतराला । सुसायटी बीता मन तो ए सरकारी दुकान हय सरकारी भाव पूरा-पूरा मिरेगा, बलुन-बलुन हाका पाड्डुन बलुन रला। सम्पत आउर खोड़ेया हुत्ताय भिड़ला। दुकान चो सेलमेन असन बीता के दखुन सम्पत बलेसे, ..."दखो भया खिर्डीक जल्दी तंवलो, इतना झोप ने हमको बेर बुड़ेगा, साग-डारा भी तो घेनना पड़ेगा ।" सेलमेन दुनों कावंड़ चो धान के मुठायक-मुठायक रापुन भाति उपर ले रिकालो असन करलो आउर बलेसे, ..."धान काफी हल्का है सर।" मानीजर बल्लो- "किसका है धान? कोन लाया है ? क्या नाम है? पोल मिलाकर लाया है क्या ?" बलतोके तो दुनों सारा भाटो कुकुरमन चो हड़पुन आनलो घाई, काय बल्ला- "किया बला...किया बला धान हल्की हय, ...एक बानी का निरवा धान को हल्की बलता हय,...तुम लोग दूसर जयसा गोटी-माटी, ढेला-पखना नी मिसाते हंय, समजे । गोटीमाटी संगे बिकने बाला धान ने बोझ रयता हय । हम सीदा आदमी हंय, धरना हय तो धरो नई तो बनेया सेठ, मारवाड़ी कोई भी तो घेनेगा।" बलुन कलंजी मारतोके सेलमेन आउर मानीजर बले ओगाय होला, आउर जनम डांडी धान के तंवलुन सात-सात कोड़ी नव-नव रूपिया के दिला ।

दुनों सारा-भाटों सम्पत आउर खोड़ेया, मारलू रे घांई बलुन रूपिया के झोकला आउर सुसायटी दुकान चो अजिक फयले जाउन बिचार करसत ...भाटो आजि तो अयतवार आय, पिला-झीला सबय आमचो बाट दखदे बे,...बाबा काईं आनेदे बलुन। असन करूं पांच-पांच रूपिया चो गुड़िया खाजा के धरून रहुं, पीला-झीला के भुलकातो उवाट करून रहुं । मान्तर एबे जों ता नूं दुय-दुय रूपिया चो फुटलो चना के धरून ....होन्दे हुन बाटे जों, बलुन सम्पत सींद

रस, सलफी-पसरा बाटे दखालो गुनुक, फुटलो चना के झोकला, चाखना काजे, आउर दुनों सारा-भाटो सम्पत आउर खोड़ेया धीरे ले भिड़ला । सींद रस, सलफी रस, धीरे-धीरे हात रांदा। रासी मन्द होते-होते फेर फूली बाटे भिड़ला । आधक, पावक, सोलक होते-होते तो बतलक उपरे बतलक होली, घरे बले फिरून एउक नी सकला । पीउन खाउन हेंवय उलडंला । एबाटे लोलो-बालो जमाय पीला-झीला मन टाकुन-टाकुन थाकला आउर अदगर राती होतो के थोतना उतराउन आपलो-आपलो डसना ने सोउन दिला ।

मरम चो गोठ

दिनक काय होली फाडरू जानसीस ? आमचो गाँव चो देहारी पारा ने नईं, एकलो पक्की छय फुटेया, मोचो हातक छापड़ायक डेंग, पातर कठेया, लाम थोतना, पाका केन्दु बरन चो रंग बीता, बड़े-बड़े आईंख चो पाकलो माण्डोबांगा घाईं रिगरिग-रिगरिग गाल ठवका कोन तो अंगरेज पलटन असन बीता सायेब इलो आउर बोंडका मामा के पक्की चमकाउन भाती काय बलेसे बे- "एड़े ये जंगली मेन, हमको इस गाँव का फटेल से मिलना मांगटा हाय, ठुम उसको जल्दी हाजिड़ खड़ेगा" बल्लो, ..."मंय तुचो दादी चो भाटो नोहांय रे बयला थोतना चो बेंदरा, कोन राज ले इलीसीस जाले? माकड़ मुंहा कोन लग चो" बलतोके, हुन बोंडका मामा चो गोठ के नी संमजलो आउर बलेसे- "ठुम किया बोला, हाम नई समजटा- ठुम इस विलेज का फटेल को बुलाएगा, नई बुला सकटा ? हमको बोलो"- बलुन पटेल, एबे काय एयेदे - तेबे काय एयेदे, बसलो से बेचारा दिन बुड़त ले, हेंव जानू बोंडका मामा सुने नी सुने असन होलो आउर अयतवार हाट बाटे फसफस ।

पाछे काय होली मामा तो गेलासे हाट । लेका लेकीमन सांज होवतो के दखसत बाट। बोपड़ा बिचारा हुन पंडरी गोंदरी पलटन बरन चो सायेब टाकुन-टाकुन थाकलो आउर पूछते-पचारते कचरू कतवाल घरे अमरलो। कचरू कतवाल हुद हापड़े मंजी खमने डुरका के भेटलो घाईं हुन जंगा-पांगा आउर टोप बीता के दखलो, काय थरथर होते एउन, सलाम हजुर, कसन कोन बाटे एतो होली बलुन पूछलो गुनुक, सायेब बल्लो - "डेखो मेन टुम इस विलेज का

कोटवाड़ आई मिन चौकीदाड़ हाय। तुमाड़े गाम में इधर कितना लोग मर गया हमको बोला?" बलतोक कतवाल सांगलो- "नाई सायेब आजकाल एई जोन भीतर नें चवदा लोक इस गाँव में ओकी आउर पातर-झाड़ा में मर गया आउर एकलो के खुब भुकार था, हुनी पय घरे भी नी मरा, सिरहा घरे नेये थे, उहीं पर फउत हो गया," बलुन सांगलो। तेबे जानू सायेब पूछलो- "अच्छा अब आप ये बटाईये- इस गाम का, इस विलेज का आदमी काहाँ का वाटर यूज करटा हाय, आई मीन किस जगा का पानी पीता हाय?" कतवाल बल्लो - "पानी तो सबय गाँवकारी गोटकी थान चो खाउंसे हजुर, हमारा गाँव ने गोटकी झोड़ी हय, सब लोक हुंआय का पानी खाते हैं ।"

सायेब पूछलो - "अब ये बटाओ कि गाम वाले कोई सड़ा-गला चीज जैसे - कोई फ्रुट, मीट या स्वीट का यूज टो नई करटा हाय?" बलतोके कचरू बल्लो- "डंडीक बसा हजुर हम डरेस नई लगाया हय, डरेस पींद के हम अभी आयेगा" आउर सबके सागेन्दे बलुन ए गाँव चो लोक बले केंव गेला जाले, गाँव ने कोनी बड़े-छोटे इलो बेरा बले गाँव ने गोटोक निहांत बलुन, भीतरे जाउन हुन कतवाली बीती निलिया कोट के पिंदुन झटके टोपी-टोपा के लगालो आउर फेर एउन बल्लो - "मंय झूठ नी सांगे हजुर, गाँव ने सबय तपलो चे खासत, बासी-बासा के कोनी नी मनेआवत। मान्तर नई ए गाँव ने एकलो बोंडका नांव चो सियान आसे हुन जाले कोनी हाट के नी चुके। कसन-कसन बेरा तो दिनक आदक संकर भगवान के बेल पाना चेगातो छुटेसे मान्तर बोंडका जाले कोनी अएतवार हाट के नी छांडे। अएतवार दिने-दिने हाट जाउआय आरू गाँव-पारा, सहर-नंगर सबय घरो घर चो पीला-झीला, डोंडकी-बोंडकी मन के अएतवार हाट चो

लटकनी गुर चो लाडु, रंग बीती जलबी, पिसान बीती गुड़िया खाजा के आनुन बाटुआय। तुमी आजि एथा थेबा नुं, खुदे दखासे। आज बले हाट बाटे गेलोसे...डंडीक ले अमरेदे बे, गाय-गोहड़ी घरे-घरे अमरला बे, हाट ले एतो टेम होली, हुन काईं नाहले काईं, केबेय तो मिठई, केबय गुर बोबो आउर केबय गुड़िया खाजा आनुन बाटुआय। आजी काहाँ जायदे। आज तो तुमि सपड़ावासे। हुनके खिंडीक अच्छाय बत्ती दियास। सांगले नी समंजे। गाँव-पारा चो अबूज लेका-लेकीमन बले हुनचय पटेया होउन टोंड के फाडुन हुनचय चारचा के सुनुआत। हुन जसन बल्ले, जसन सांगले, हुसने होसत। मोचो बल्लो गोठ के तो कोनी धरोत नईं मंय किया करूंगा" बल्लो। गुनुक फेर हुन भगवान रूप ने केंवले एउन अमरून रलो जाले, हुन पंडरा पोटेया सायेब बल्लो - "आप लोग मारकेट का आई मीन हाट का बासी एण्ड सड़ा-गला चीज को खाटा हाय एण्ड डरटी वाटर को यूज़ करटा हाय, इसीलिये इस विलेज में बीमारी होटा हाय और इस गाम का लोक मरटा हाय। आज से टुम सब लोक क्लीन वाटर आई मीन साफ पानी का यूज़ करो, पानी में क्लोरीन दवा डालकर दस-बारा, टेन टू ट्वेल्ब घंटे के बाद उसका यूज़ कड़ो। टब कोई बीमाड़ नई होगा" - बलुन सांगलो। "उसन जाले अयसा करने से कोनी नी मरेगा ने हजुर," बलुन पूछलो कचरू।

फेर काय सांगुआहास ता बोंडका सियान चो आनलो बीती के हारक फेर लेका लेकीमन हाते झोकला आउर सीदा खतकुड़ा ने पकाउन दिला।

लंगड़ही चो कमानी

एदे गेलो सोमार दिन चो गोठ आय, रोना आउर लखमू तिरनाथ कोस्टा घरो बेड़ा पार ने उबुन भाति आपलो-आपलो जीवना खावना चो गोठ के गोठेयाते-गोठेयाते भेंडी भाजी आउर मिरी चो गोठ के निकराला । तप्प रे फेर भाजलो मूंग चो गाजा होलो असन मंय बले हुदलय दांय हुता अमर ता, मके दखुन लखमु लाफी ले चे बलेसे - "इसुय एसीस जाले खिंडीक धुंगिया धरून आव भाटो, गुंडा धुंगिया जाले टोंड के तसेयानास करली ।"

मंय करांड चो धुंगिया चुनटी के चपकन चो जब ने डगराएंसे, हुता रले तो मिरूआय ने ? चुनटी के तो करांडे खोचलेंसे। चपकन चो जब के टामडुन मंय बलेंसे- "चुनटी कोन तो लगे बंयडली कायले हो, एदे जब ने बले निहांय।" रोना बल्लो ।

"निहांय जाले रहुक देस दादा, एमन चो टोंड के काय आमी तसेयानास करलुंसे ता ? गाँव के छांड, पारा के छांड आपन गेलो-गेलो, भेंडी भाजी आउर मिरी के बले संगे-संगे नीलोसे साला ।"

"सत्ते आय ना लखमू - खुबे दिन ने दखा दिलीस," "आजिकालि काहाँ आसीस ? भेंडी, भाजी आउर मिरी बले तुमचय बाटे आसत काय ? तेबे तो हाटे पटने बले, अबगो आलु गोंदरी आउर लाखड़ीदार ।" रोना बलेसे - "आजिकालि एचो ठाब के काय सांगसे दादा, आघे चो लंगड़ही लखमू थोड़े आय, काने सोन चो बारी, हाते चयन बीती घड़ी, सफरई धोती आउर बुरूसकोट, खान्दे बाजा।

तोंगपाली चो परताब ने भेंडी, भाजी, मिरी आउर चारों झान नांवा-नांवा सायकल मन बले घेनलासत मने। घरे उतरालों बीती हात रांदा बले आजकाल नी चले बलसोत। अबगो लुका चोरी बीती बरांडी नाहले फेर हुन आंगराजी मंद। काय नांव तो बल्लो- काय नांव सांगलीस ना लखमू डिक्लोमेट ?" मंय पूछले रोना के - काहाँ ले बले पावसत रोना एमन, असन-असन तीज के ? "काहाँ ले फेर पावसत ता, कुकानारेया मन चो जान-चिनार सहरेयामन जानूं फटफटेया मन ने दुनों पाट दुनों डबा ने भरून घरे-घरे अमरान देसत। आउर तम्म-तम्म रे दुनो डबा के भरून इसु जयपुर नाहले हेंव आंदरा।

हों..ऑ..ऑ... ऑं, तेबे तो आय इतरो जोड़। कसन रे साला फन्दी, खिंडिंक आदक बेड़ा-खाड़ा बले जोंगलीसीस।" काहाँ भाटो, हेंव जंगल राज चो बेड़ा-खाड़ा के जानसीस बे काय ? जेचो लगे बड़े-बड़े मुंडा बेड़ा मन आसे हुनमन बले तो असनी पड़ेया जायेसे। आमी तो आन गाँव चो पाहनाकारी नोहांव। एथा सींग नी समलो लागुन तो हुता जाउक पड़ली। हुन तो आय। अच्छा करलास गेलास मान्तर जीवना चो मूर काजे तो काईं नाहले काईं करूक पड़लीसे। तुय काय बुरती के धरलीसीस ?

असन होली काय भाटो - गेलो सरलगा हुता आमचो गोटोक आई डोकरी रली नईं? हुनचय थाने रहुन आमी खटेया कुरची, नांगर-नांगरी बनाउन बढ़ई बुता के करते रलु। घर रेटे-रेटे तो सायगन रूख, छीना दखुन ढुलालु कि छोल-छाल करून निमड़ान दिलु। दिनक गोटोक बड़े मेछेया नेंजर तो अमरलो, सीद्दा घरे ओलुन कचकायेसे नईं- साला समंजता किया हय, जेहेल नईं भिजवाया तो

मेरा नांव रनछोड़ सिंग परिहार नईं हय। कितना कीम्मत का लकड़ीमन को काट-काट कर ढुलाया हय बलसे।

तेबे भाटो मंय बल्ले - नाईं भगवान उसन नी कर। आजि काजे माफी देस। आमि तो कोन राजासाही राज रलो बेरा ले पढ़ेयार आउर कपड़दार सबय के मानते एउंसे, पढ़ेयार आस जाले तुके बले मानुन्दे। बलतोके लटेपटे सात-सात कोड़ी, चवद्दा कोड़ी रूपिया जरीबाना सुनालो आउर जमा सायगन लकड़ी के जपती बनान जरीबाना भरतोके छांडलो। मानसेसा अलगे देउक पड़ली। हुन दिन ले आमी बले बढ़ई बुरती के किटका टुटान छांडुन दिलुं। पाछे भाटो, एथा हुता सुनते-सुनते दख गाँव गोसईन चो परताब ने पहिल कोड़की मारते खन, हुन दिन कितरो तीन हज्जार चो टीन बिकलुं। इतरो-इतरो रूपिया पावलो ठाने फेर कसन लंगड़ई चे रतु ता ने भाटो, बेरा पस्ता चो करतो बीती भुति के बले पाछे छांडुन दिलु आउर टीन खना बाटे भिड़लु।

गुर खाउ कोलेया

सुनेर मनेर दुय भाई,
बाटे मारला कोलेया माईं।
सुनेर बल्लो धरूं धरूं,
मनेर बल्लों झटके नेउं.....।

इजिक आदक बाचली जाले डोकरा दादी के देउं ।

दादी कोन आय बल्लो ने जानास ?

सुनेर चो दादी चो नांव कनेर सिंग आउर मनेर चो दादी चो नांव रये हजारी सिंग । सुनेर आउर मनेर जसन दुय भाई रहोत, उसने सुनेर मनेर चो दादी मन बले दुय भाई रहोत । हजारी बल्ले, हजारी फूल असन छक छक्का पंडरा, बड़े-बड़े मेच्छा, मुंड चो चुंदी जमाय पाकुन भाती सन असन पंडरा । लाम-लाम हात पांय, आउर डेंग बाटे बले सलपी रूख अउस डेंगा मनुख ।

आउर कनेर ? कनेर के दखेन्दे बल्ले, हांडी चो मसी असन भींग-भींगा करेया, टांगरी मुंड ने गोच्छाएक असन चुंदी, भुजनी आईंख चो कान आउर डेबरी कान ले भंयरा । मान्तर कनेर हजारी ले भारी उबागरी आउर चिकट माटी असन भारी सूम । बेटा-बेटी आउर नाती-नुतरा के लगे-पासे हदडुक नी देये । हरमेसा लेका-लेकीमन के खीजतोर, आउर कोनी लेका कि लेकी ओंठी ने कि जब ने, काईं चरबन कि चना नाहले चिवड़ा धरून खासत बल्ले, डोकरा धीरे फुसियान भाति, ठगुन-ठगुन खाये ।

दिनक काय होली, मनेर लेका के हुनचो बुबु बीती बल्ली "मनेर, बांडी भईंस के कोठा ने ओलेयान बांदुन देस बाबू, तुके खातो बीती चरबन देयेन्दे आंय," बलतोके मनेर बांडी भंईस के कोठा ने ढापुन दिलो गुनुक, मुठा तीनेक चिवड़ा हुनचो बुबु बीती हुनाके दिली। मनेर चिवड़ा पावलो काय, खाते-खाते सुनेर घरे गेलो। जोग दखा सुनेर तो घरे नी रलो, घरे रलो सुनेर चो दादी बीता कनेर डोकरा। मनेर पूछलो - "ए ना दादी, सुनेर केंव गेलो ना?" बलतोके, डोकरा चो नंजर जब ले निकरान-निकरान खावतो बीती चरबन ने गेली, डोकरा झट बल्लो - "निहांय ना, आपलो आई बीती संगे झोड़ी कुती मछरी छिचुक गेलासत,"...बलुन पूछलो - "छेरी मन चो सिवना आंटी के चपलतो असन काय बीती के चपलुन लागलीसीस दादी,"? बलतोके मनेर लेका जब ले चिवड़ा के हिटालो आउर डोकरा के दखान बल्लो - "टेटंगी चिवड़ा आय ना दादी, बुबु दिलीसे" बलुन दखातोके डोकरा चो टोंड ले सर्र के पानी इली। बल्लो - सुका चिवड़ा के खातोर नुहांय रे बयहा, पेट मोड्डु आय। चिवड़ा के दही ने फुलान गुर संगे चटकुन भाति खातोर आय। असन कर, एदे ए बटका ने जमाय चिवड़ा के उलद। मंय निकरायंसे गुर, तुय पराते जा आउर तुचो दीदी के दही मागुंन आन, दही ने फुलावां आउर गुर संगे चटकुन आजा-नाती दुनों खावां ।

बिचारा मनेर सत्ते के सते समंजलो, आउर जब चो जमाय चिवड़ा के गिलट बटका ने उलदुन दिलो, आउर आपलो दीदी बीती के दही मागुंक सीद्दा आपलो घरे गद बदलो । इसु कनेर डोकरा चो दांव होली, चुला उपरे ओरालो ढुटी ले ढिडांयक गुर के निकरालो

आउर मनेर लेका चो एउ-एउ जम्मा चिवड़ा के बरखान भाति मन चो गीत के झाड़ेसे -

चारी गतर, चारी आंग,
करेया मेंड़ा भंयसा लेढ़ा
गोटोक पांय के बाहरे पकाव,
कोन गुरू, कोन चेला रे.........
आसना गाँव चो पाकलो केरा के दही ने बोरा रे........

बलुन ...बलुन गीत झाड़तो बेरा मनेर एउन अमरलो आउर बलेसे, ए ना दादी, दीदी के दही मांगतोके दुय चटकन दिलीना आउर दही निहांय जा पराव बल्ली । सुकाये चिवड़ा के चपलुं बे। बलतोके डोकरा तो एकेदांय बयहा कुकुर चो खेदुन चाबलो घाईं लेका के धमकालो नईं, रले तो चपलवां, तुय गेलीस दही काजे, मंय गेले गुर हिटाउक, इसु जमाय चिवड़ा सारस, कोकोड़ा चो बाटा होली, तुके जाउक देउन मंय खादले बलसीस बे कोन जाने ने ? मकें तो लटा धरेसे भतउ काहांचो ।

बिचारा मनेर बल्लो- "तुके लटा नी धरें ना दादी, सारस कोकोड़ा नुहांय बे, खादला जाले ढुटी चो काकड़ा मन खादला होती, आले जाउक देस, खादला जाले खादला बे। मान्तर ए दादी, काकड़ा मन चो आईंख मन के, पेट के, आउर चाबुआत जे हुन डाड़ा मन के तो मंय दखले से, मान्तर टोंड के दखलोर निहांय। काकड़ा मन चो टोंड बले रहुआय ना ? बलुन पुछुन देतोके तो डोकरा बल्लो- अरेंता, ए लेका के तो भारी गियान आसे, चोरी लुका में खादलो बीती के बले जानलो तेबे, बलुन सुसकुन गागुक मुरियालो। "काय होली ना दादी, काय काजे गागसीस ? सांग तो," बल्लो लेका गुनुक डोकरा बल्लो -

"नुहाय मनेर, मोचो गुर के कोलेया खादली आउर तुचो चिवड़ा के बिलई लुकाली ।" बलतोके मनेर बल्लो- "हुनी कोलेया होयेदे, ओगाय रा ना दादी नी गाग । तुचो गुर खाउ कोलेया के तो काली मंय आउर सुनेर जमपुर अमरान दिलुं । बाचली चिवड़ा लुकाउ बिलई, लटे-पटे कोनी दिन अमरालु जाले हुनाके बले पतालपुर पठाउन देउन्दे, तुय नी गाग । बल्लो बिचारा आउर जात्ते गेलो ।"

कुकुर चो लेंगड़ी

मालगुजार घरो बांगा बाड़ी के राखा करू सुकुलधर डोकरा चो बेटा चो नांव गोबरधन रये। संगवारी लेका-लेकी मन आउर गाँव पारा चो बड़े-छोटे जमाय हुनके गोबर चे बलत। गोबरधन के गोबर बल्लो काजे कोनी खत खोदरा ने फिंगलो गोबर तो नी होये? फेर गोबरधन असन तो धन चे निहांय। बिन गोबर चो खत काहाँ? आउर बिन खत चो भात काहाँ ...नोहांय ? समझुन आनले सबय आय, नी समंजले काईं नोहांय । तेबे तो मुन्दरामांझी घरो चिपड़हीन डोकरी बले, केबे-केबे आपलो गोसेया के बिरबिरा होवलो पाहार, ठेट-ठेट अमरान देउआय । दुर्रे- काहाँ चो खोसली छंडालो काना भीमा, काईं गोठ के बुझे ना समंजे एकय तो बलुआत 'अबुजा के कुकड़ा पूजा'।

असनी अबुजा लोक के गोबर होले काय करूक होयेदे ? गोबरधन चो गोरोस खादलो दांत नी झडु-झडु बोपड़ा बिचारा गोबर के सुकुलधर डोकरा दिनक हुनचो दुनो हातमन के धान भारा बोहलो बेट ने बांदलो आउर दुनों गोड़ के सियाड़ी डोरी ने आरून सांदलो आरू सीद्दा नेउन मारीगुड़ा पारा चो परायमरी इसकुल चो कोस्टा गुरूजी के सोपुन बल्लो - ...दख गुरूजी, सरकार चो मांय-बाप बल्ले तुय आस बे । एदे लेका के आनुन दिलेसे, एचो नांव के लिक-एचो नांव गोबर आय ।

गोबर नांव के सुनते खन तो कोस्टा गुरूजी के रानी असपताल चो सूजी मारलो घाई लागली कायनू, एकेदांय दुनो गोड़ के

कुरची उपरे आनुन उखड्डु बसलो, आउर पीवतो बीती खुटी सिकरेट के लिबाउन भाति उपर चो जब ने तुरचुन दिलो, आउर बलेसे - "अरे चल हट, सरसुती के मंदिर ने गोबर के लाया हय। ....ले जाव उधर। साला, सब गुड़-गोबर कर दिया ।" बलतोके, विचरंगा सुकुलधर डोकरा, गाग गागरी होउन बल्लो - "नाईं माहप्रु असन नी बल - तुचो बाटले मके कोटी नमस्कार। तुचो जातो बीती सुनी होओ, एतो सुनी नी होओ, दख नूं तुचो पड़ालो कितरो पिलामन आजि करट पड्डुक सिकला आउर पाठा पड्डुक बले धरला। बरख दुयेक आउर पड़ला जाले जमाय झन आमा पाड्डुक बले जानदे बे। ए मोचो गोबर नोहाय, एके तुय आपलो गोबर समंज, आउर कित गिलास के एके निनास ने झिक्कुक सकीस जाले, हुतरय गिलास एके बले सिकान देस। दख नूं, मंय इतरो उमर होलो ठाने बले अंडका बोट ने ची रले आउर बांगा, भेंडी आउर मिरी बाड़ी चो राखा जागा ने ची जीवना करेंसे, नाहले इतरो दिन मंय बले कोनी ठान चो इमिली नाहले तेतर नी होते?"

कोस्टा गुरूजी लटेपटे मानलो आउर बल्लो- "ठीक हय सुकुलधर, हम तुमारा गोठ के समंज गये । इसका नांव गोबर होवो, चाहे लीद । इसको हम पोड़ायेगें, जरूर धुमधुमा होते तक पोड़ायेगे। बलुन उपरपुर चो बरमा बाबा चो गीर काटलो असन लिखनी काड़ी ने गोबर चो नांव के सोली के छांड्डुन पयली गिलास ने लिखलो ।

गोबरधन के इसकुल ने गुरूजी के सोपुन दिलो आउर सुकुलधर डोकरा बांगा बाड़ी ने एउन खीसी काजे दुनो आईंख के एकेदांय लिमट्टुन दिलो । दुसर दिन चो बिहान के बले नी दखलो ।

बिचारा लेका गोबरधन, हुन दिनत ले रोजे इसकुल जाये आउर गुरूजी चो पड़ालो पाठ पिताम्बरी, जम्मा के सीके।

दिनक गुरूजी बिचार करलो कि गोबरधन कितरो सिकलो, कितरो पड़लो, ...आजि एचो परीच्छा धरूक पड़ेदे बल्लो आउर गोबरधन के लगे हाक देउन बल्लो- "देखो जी गोबरधन आज तुम्हारा परीच्छा हय। हम जो पूछेगें, तुम उसका जवाप दोगे, समंजे ? ठीक हय- तुम्हारा नाम किया हय?" लेका बल्लो - "मेरा नांव दोबरदन हय ।" गुरूजी पूछलो- तुम किस कक्षा ने पड़ते हो ? लेका बल्लो - "मंय तीतरी गिलास ने पड़ता हूँ।" फेर गुरूजी पूछलो - तुम्हें जो गुरूजी पड़ाते हैं उनका नांव क्या हय ? गोबर बल्लो - "अमारा दुरजी ता नांव तोत्ता दुरजी हय।" अच्छा तो ठीक हय अब तुम मेरे आखिरी सवाल का जवाप देव - गोबरधन, मिठई मांदी ने तुमको कोन सी मिठई जुगे अच्छा लगता हय ? गोबर बल्लो- "जी दुरजी अमतो दुरियाताजा मिठई अत्ता लत्ता हय," बलतोके कोस्टा गुरूजी बले समंजलो - ए कुकुर चो लेंगड़ी आय, सोन चो नरा ने भरलो ने बले सोज नी होय। बाकटा चो बाकटा रयेदे ।

सासा रहोत ले आसा

धन-धन रे धरतनी, तुके लखी कोटी सरन। तुचो कोरा ने नाना परकार चो जीव-जन्तु, कीड़ा-थापा, चड़ई-चिरगुन, पिला-सियान, लेका-लेकी आउर लोलो-बालो मन जनम धरसत, खातो काजे जीवसत आउर जीवतो काजे मन मन चो चारा-चरबन, मास-मछरी, कुकड़ा-बोकड़ा, निसा-पानी, बोबो-रोटी, पाक-फर, उपाय-दाव, बनान-मिरान, जीवता जीव भर जीवसोत आउर मया टूटली कि बूटा फिटली बल्लो घाईं दिनक केंवतो आईंख कान के लिमटुन मांय के छांड, बाप के छांड, भाउज के छांड करून छुटे गदबद उडुन जासत।

असनी किसम चो दिन दुनिया, हाल-चाल के बिचार करून कोन तो मोचोय असन जनम लिडिंग-तिड़िंग थाकलो बीता कोन तो मरताहा डोकरा बल्लो मने - काय करूं आय ता बूबा, दईब चो दिलो जीव के, चाउर नी पुरलोर हानुक तो नी सकें ? सासा रहोत ले तो आसा आय, बलुन धरमा डोकरा ओछान सवलो टाटी के उठान कोन तो कोन्टा डेरून दिलो आउर आपलो समदी बीता बस्तरीन माता चो पुजारी करमा डोकरा घर बाटे जाते गेलो मने।

धरमा सियान चो असल नांव धरमू चन्द आउर करमा सियान चो असल नांव करम चन्द रहे। मान्तर गाँव चो बड़े-छोटे सबय हुनमन के आपलो-आपलो सुभिता काजे धरमा आउर करमा बलते-बलते हुनी चे नांव पडुन गेली। काचोय नांव काईं होले बले नांव ने फेर काय आसे ता नें? धरम चन्द ले धरमा आउर करम

चन्द ले करमा चे तो बला। काकय झुंड़गा लिटी नाहले ओखनी खाया कि बफराहा आउर भेनस नाकेया, मांडी जोड़ नांव तो नी संगाला। नोहाय ? धरमा आउर करमा बले तो सुआ मयना चो जोड़ी बल्लो घाईं गोटकी मांय चो पिला असन रहत। गोटकी गाँव, गोटकी पारा ने जीवला। दुनो आपलो-आपलो सुख-दुख के बाटुन कोनी तीसर लगे नी जाउन आपनें पूछ पचार करून सोर सुतुर करोत। तेबे तो पन्दरा दिनत ले डसना धरलो बीता धरमा डोकरा बले सवलो टाटी ने पड़े-पड़े सुरता करलो कि, ठवका सुरता इली- गेलो अयतवार नईं हुनचो फयले चो पंडरी अयतबार दिने डसना धरलो मनुख आंय, आजि संगे पूरा पन्दरा दिन होली, हाट नईं पटन नईं। सहर नंगर, गाँव-पारा चो थोतना दखलो निहांय। कोन लगे काय होयसे हुनके बले जानुक नी होय, उपर ले ये टिरटिरी उपरे पुरानी, नी मिरून मिरलासत मके नाती-नुतरा, लोलो-बालो आउर डोंडकी-बोंडकी मन।

अधराती कावरा गागुक मुरियाला कि कल ढेकी चो पोंगा बाजलो घाईं, बांजा घरो बेटा चो टकर करलो ले आगर कोन तो कठलेसे आउर कोन तो सुसकेसे। उठत बिहाने होतोर आय मने ए कलजुगी पोरटा-पोरटी मन के डोबलाएक-डोबलाएक बासी भात नाहले चरबन। रोज्जे दिना काचो घरे काय मिरेसे? हपता दिन ने दिनक तो हाट आय, नाहले तो फुसुर ढुंग फुस फास, बयहा मांजी घरो ढेकी ठड़गंस बल्लो असन हांडी-कुंडरी ढुड़ंग-ठाड़ंग, टामडुन दखले छुचाय।

जग ले जीता फेर अयतवार दिन, फुलसुंदरी बेरा ले धरून अदगर रात ले बले घर चो लोक हाट ले फिरून नी एओत ले, काचोय घरो बेटी-बुआरी के दखा पिला-झिला के हिरकुन नी दखोत।

उल्टा चिमक-चामक करून, मारून-पेटुन गगान देसोत आउर रेडियो बाजा मन के चालु करून बलसत- टोंड मन के फाड़ुन, आईंख मन के ढेरून कान के टेरून सुनते राहा रे सतेयानासी-बारामासी मन, पाकलू डोकरा हाट ले इलो, कि चापा लाडु आनुआय। गुर ने पागलो बीती चापा लाडु। चापा लाडु चो नांव के धरते खन फेर पोंगा बाजा-बाजी एकेदांय चिम्मनाय। लहर-लहर धरमचन्द तीन-तीन टांडी मंद के खाउन, लटपट होउन कलंजी झाड़ते हाट ले फिरून घरे अमरला। लेका-लेकी सुकुड़दुम होउन भारी हरीख। एदे-एदे, होंदे-होंदे अमरला। ओगाय रा रे लेकी डोंडकी तुके सबले आगर मिरेदे, आउर हेंव धरमा आरू करमा बलसत, ...ए किसका घर ने तुम लाया समदी ? अरे ए तो मेरा चे घर आय समंदी बलुन मोंडरा-मोंडरी के ढिलुन दुआरे बसुन चापा लाडु के खाउन-खाउन मन चो रीलो झाड़लो घाई गीत झाड़सत -

‘चिटकी बूटा चिटकली, मया फुटकली
अयतवार हाट चो चापा लाडु दांते लटकली ।’

मेटावाड़िया अनंतराम स्वर्ण बले फेर हुदलदांय हुता अमरता- तीनों झान लेहराते गाउक धरला, बलसत.....

‘मार रे मंजा लाग लागीजा,
गुड़िया खाजा फुकट सजा,
बिलई उपरे घोड़ा चेगे, बामड़ाकरेया राजा ।’

बलुन-बलुन, लेका-लेकी जमाय थाकत ले नाचला आउर आपलो-आपलो बाटे जात्ते गेला।

मनधर चो मसागत

"काचा टेमरू खादले मामा,
पेट गुड़-गुड़ करली ।
मामा चो बेटी के दखुन देतो के,
धरून पराव-पराव लागली ।"

बलुन बिया घरो साते सुआसिन चो कोटनी झाड़लो घाईं, गीत झाड़ते सिंगार भाटेया घरो मनधर लेका जानू, डेबरी खांदे खंडकेया गपा ने गपाएक तेतर के बोहुन, लहर-तहर मुंडे बेरा घरे अमरलो। खाक खाले-खाले, आरू टीप नाक ले धरून दुनो क़ानपाटी ने देहें चो पसना धार बोहुन सुकुन गेलीसे, मान्तर मनधर लेका के हुनचो चेत निहांय। गाय ढीलते खन, ओकोड़ी लाठ आउर गोटोक गपा के धरून, कोनाड़ी कुती तेतर पदर बाटे उठत बिहाने गेलो लोक एब्बे फिरलो। एई आय बे मनधर लेका चो पाहरक चो बुता।

कायतो बुता सुरता एतोके मनधर चो बाप बीता सिंगार भाटेया सियान आपलो मेहरार बीती के पूछलो बले - "ए मिटकी, लेका केंव गेलो तेबे ? राती बुडगी भईंस दामा के टुटान तीन गोंदा बनालीसे, हाट लगले बले जाउन दखतो" बलतोके मिटकी, एकेदांय फनस आमट के सुकामिरी ने बघारलो घाईं छड़बडुन तो गेली। "मंय काय जाने, पोरटा केंव गेलोसे मरलोसे कि, काकय सागुंन काहांय गेले तो कोनी जानेदे? ए घरो घर गोसेया के दखो जे हाल, बेटा-बेटी के दखो हुनी हाल। गेलो हाटे धरमदास चो भाउज बीती चितालुरीन बोके के, हुनचो मनुक बीता संवराकरेया दादा, डांडा बिकुन सोरा कोड़ी

छय रूपिया चो नांग मोड़ी घेनुन दिलो, आउर आमचो घरो ये संड बयलामन, केंव तो भुकरते-ढुसमते बुलसत।" बलुन भेजरातोके सिंगार भाटेया सियान, चिमिकनाय रे ओगाय होउन दिलो ।

मनधर लेका चो आज हरीक चो मारे ठिकाना निहांय । भारी हरीक । हरीक बल्ले असन होली। मनधर चो हेंव बिहाने ओकोड़ी लाठ आउर गपा धरून घर ले निकरतो के दखुन गाँव गोसईन सिराहा चो बेटी पन्चला बले गोटोक गपली धरली आउर चवखंडी छापा बीती लुहंगी के गोरलई होते सोरे सोर मनधर चो पाट-पाट तेतर कुदा अमरली। मनधर बिचारा गम नी जाने, हुन तो आपलो खमोरा रूख चो तेतर के पाकलो दखुन गेलो हपता ले चे मने मन उवाट करते रलो। एसु तो भगवान ठवकाय दिलीसे। तेतर के झाडुन-पाडुन हाटे नेयेन्दे आउर रलो नी रलो पाहार घर खरचा के तो थामेदे चे, उरान-बचान पंचला काजे बास बीती साबुन्द आउर बास बीती पावडर डबा घेनुन आनुन देयेन्दे। मान्तर, मान्तर तिरू आउर कमलबती बले तो आसत। हाट ले इले एमन बले तो बलदे - आले ना दादा, आमतो ताजे ताय ताय आनलीस? ...बलुन, हात ले झोरा के टामंडला जाले? नंई तिरू काजे पेंडखजुर आउर कमलबती काजे पिपरनेंट बले आनुक लागेदे। आया काजे चना भाजा संगे मिरी भजेया आउर बाबा चो इसु हेंव काहांय एतो-जातो बेरा काजे गोटोक झोरा बले आनुन देयेन्दे बलुन बिचार करते रूखे चेगलोसे कि, पंचला बले कले-कल रूख खाले अमरली आरू मनधर बाटे सुतरान उट्ठान गोटोक लबेदा पकाली। कसन तो लबेदा मनधर के नी पावली, नाहले होउन रली हुनचो बले बुता । ...कोन अंधरा आय कि अंधरी आय रे ? कसन,

काय लोक के बले नी दखे ? बलतोके मंय तो आंय लेका, नी दखले गुनुक तो लबेदा पकाले, बल्ली पंचला । एं, तुय आस रे खाबड़ी, आले तुय आस जाले काईं नीहोय । तुय लबेदा काय पखना पकान मारले बले मके नी दुखे, बलुन फुसलालों आउर बल्लो - तेतर बेचुक लाग लेकी, तुके हाट दखाक नेयेन्दे बलुन धड़धड़ा डंडीक ने रूख चो तेतर के पाड़ुन दिलो मनधर । पंचला जमाय तेतर के गोटोक लगे रूंडाउन भारी पेटुन छोलका छंडान दिली आउर दुनो झन गपलक-गपलक तेतर के बोहला आउर हाट जातो काजे हरीख-हरीख आपलो-आपलो घरे बोहड़ला ।

लहर-तहर तेतर के बोहुन इलो के दखुन मनधर चो मांय बीती मिटकी बले मनधर के काई नी बल्ली, पारले हुनचो हरीख मन के दखुन आपलो मने-मन बिचार करली कि लेका तेतर पाड़ुन आनलो से, आजि ए हाट जायेदे, मनधर हाट गेलो जाले मंय बले जायेन्दे । मांय-बेटा तेतर बिकुन मन-मन चो तीज घेनुन्दे । बरन-बानी चो खाजा-खजाना खाउन्दे । होली जाले खुबे दिन होली पान खादलो निहांय, आज गोटोक पान बीड़ा बले खाउन दखेन्दे, बलुन बिचार करू-करू जमाय बानी हाट चो किसम-किसम चो तीज हुनचो आईंख पूरे लुरून गेली ।

मनधर तेतर गपा के मंडाउन, झटाझट दुय कसला असन पानी के रिकाय होवलो आउर तीन दोनी असन पेज के कुमडा आमट संगे झिकुन तंग तियार होवलो, तेतर के कांवड़ ने जोंगाड़लो आउर फसफस ।

मनधर चो गेलो पाछे पंचला बले अल्टेया झुड़ा पाड़ुन -

टेलीकाट लुगा संगे हरदेया बिलाउच के पिंदुन चिकन-चाकन होउन, सोरा-सिंगार करून हाट जातो काजे मनधर चो बल्लो अन्सर ने एउन धमकली आउर दुआर ले चे बलेसे- हाट जासास बुबु ? जों नईं हाट जावां । आया नोनेया सुकसी काजे पयसा दिलीसे बलतोके मिटकी फेर तो छड़बड़ली - तुय जाते रा हाट । हाते दमड़क पयसा निहांय । बरमसेया पोरटा कांवड़क तेतर के पाडुन आनलो, आउर एकलय मोरलो गेलोसे । सांज बेरा दखेन्दे जानु, घरे चिमटक लोन निहांय । काय के खादे मरेदे जाले। मंय बले दखेन्दे, ओग्गाय बसुन रहेन्दे । बलुन मनधर चो हाट नी नीलो आपलो जमाय रीस के पंचला उपरे उतराली, आउर बाड़ी बाटे जाउन सेमी लाहा आड़े जीव हलका होत ले बसुन रली । पंचला बले फेर काहां चो हाट जाती ता, धोकाबाज मनधर तो हुनके पय नी नीलो एकला मोरलो गेलो । मिसु-मिसु होउन पंचला बले आपलो घरे फिरून इली ।

संड संड चो लड़ई

लेका-लेकी मन आउर नोनी-पापा मन, आमचो-तुमचो घरो सियानमन केबे-केबे बलुआत "संड संड चो लड़ई आउर उसरी बूटा चो मरनी।" ए गोठ सोरा आना सत्ते आय। काय काजे बल्ले-तुमी बले आपलो-आपलो घरे आईंख मन ने दखासाहास, तुमचोय पूरे केबे-केबे तुमचो घरो, डोकरा आउर डोकरी बाता-बाती होवसत तो बाप-बेटा नें ठेंगा-बड़गा धराधरी होवसत । दादा आउर बोउ झगड़ा उमंडाला, नाहले सतरी आउर बुआरी सरापा-सरापी होवसत। असने लेका-लेकी मन, कुकुर-कुतरी, कुकड़ा-कुकड़ी, छेरी-बोकड़ा संगे-संगे बिलई टेंडका, कीड़ा-थापा आउर सांप संगे नेवरा मूसा चो बले लड़ई होवतो के दखुक होयेसे ।

मान्तर, दिनक काय होली जानासाहास? केबे-केबे तो मके ये सियान मन चो गोठ के सुनुन भाती, बिरबिरा बले लागुआय। आमचो गाँव चो एकलो सियान बलाय होउ बीता के दिनक सियान तो नई तुय नाक चो सिंगान आस बले बलुने दिले, काय काजे, सांगुआंय ? हुनी नाक चो सिंगान, दिनक काय बलेसे बे- "बिहान पहार चो उमंडलो झगड़ा, आउर सांझ बेरा चो मुरियालो बरसा, झटके गुचु नोहांय बलेसे।" ए सबद मोचो काने पड़ते खन मंय बिचार करले, आउर हुन सिंगान के मुंडबांदा ने पोछी होवतो के दखुन पूछले- कसन हो सियान, ए झगड़ा-झगड़ी चो गोठ होयेसे जे, काचो झगड़ा काचो संगे होली आउर किदलदांय होली ? तेबे पीलामन, सियान बल्लो- नाई रे भोकवा, गोठ झगड़ा चो आय, आउर झगड़ा एबचो नोहांय ।

खुबे दिन होली, दिनक सबे सोआ पड़लो राती, पखनागुड़िया धरमु काकु घरो, मंझी बाखरा ने सरई टांडी आउर चितरी टाकरा चो लगड़ताल झगड़ा होली। बलतोके, मोचो हांसई चो ठिकाना निहांय। पेट के लगड्डुन-लगड्डुन पेट्ट भर हांसले आउर बल्ले - ए ना धरमु काकु, ...सरई आंडी आउर चितरी टाकरा चो झगड़ा के तुय आपलो आईख ने दखुन सांगसीस ना? मंय तो नी पतआंए तुचो गोठ के। माटी चो टांडी आउर बावंस चो गाथलो टाकरा बले केबय झगड़ा होलासत? तुय बले जंजाल फन्दी आस कायनू? बलतोके पखनागुड़िया काकु बल्लो- नी पतेयाइस जाले जाउक देस। जलगंट भीमा बले नी मरलो से बिचारा, साकी आसे। हुन दिन राती जलगंट बले कुकड़ागाली ले एउन, एथाय ढेकी सारे सउन रलो, केबय जाउन पुछुन दख मने? काय सांगेदे जाले सुनसे। बलतोके फेर मंय पूछले- काकु तुय बलसीस जाले आय चे बे जानू, मान्तर झगड़ा काय बात चो होली, हुनके तो सांग ।

तेबे फेर पखनागुड़िया काकु सांगलो- झगड़ा काय बात चो आय बल्ले- सुन मंय सांगेंसे, ...हुन दिन रली अयतवार हाट । खुबे दिनतले आमचो घरो पोरटा-पोरटी मन कुकड़ा मिठई काजे टेक करोत आउर काहांय ले मांग-जांच करून आनुन बले दिले, झीकाटाना आउर चिमका-लाफड़ा बले होओत । तेबे जानु लेका, तुचो काकी, हाट ले फिरतो बेरा, नेउन दिले खादे मरदे बले बलुन, तीन रूपिया चो कुकड़ा मिठई आउर रूपिया दुएक चो चापा लाड्डु हाट ले घेनुन आनली, आउर नांवा सरई टांडी ने भरून उपर ले चितरी टाकरा के ढापुन अंधार बाखरा नेउन सीका ने ओरान दिली । इतरो ने घर चो

जमाय मांई-पीला राती बेरा खादलूं-पिवलु आउर आपलो-आपलो बाटे डसना धरलुं ।

अदगर राती, हुनी बारा उपरे एक बजे असन, मोचो झुमा हुराहा तो झगड़ा के सुनुन उचटली। तेबे मंय तुचो काकी के, आउर पाछे ढेकी सारे सोवलो भीमा के चेताले, आउर बल्ले - सुन तो, कोन आत जाले ए राम-राम बेरा झगड़ा होसत। बलु-बलु सरई टांडी जानु ढुंग-ढांग, ढुंग-ढांग, ढुडुस करली बे। चितरी टाकरा बले फेर काहां मानती ता ने? चेर-चार, चेर-चार, चेरेक बलुन टांडी के अंडखी फुटान फुटान सरापुक मुरियाली। सुनले-सुनले, आउर मंय तुचो काकी के बल्ले - जा रे दख तो , कोन मन आत ? काय काजे मरसत झगड़ा होसत जाले। दुनो के अजिक समंजान देस। तसेयानासी जात, सुख चो नींद सोउक बले नी देओत। बलतोके, तुचो काकी फाडरे-फुडरे उठली आउर कपाट कोन्टा बुतालो माटीतेल चिमनी के बारून, कले-कल झगड़ा-कोलार चो आरो के सुनते-सुनते झगड़ाहा-झगड़हीन मन लगे अमरली। तुचो काकी चो चिमनी धरून अमरते खन जसन चोर पराउआय, उसने ए जत्तेया घुसरा पीला असन गोटोक पाटेया मुसा टांडी भीतर ले एके दांय तुचो काकी उपरे डगाली, ...आउर कोन तो बाटे छू। डर काजे, तुचो काकी चो ठिकाना निहांय। हाते धरलो चिमनी हात ले छांडी होली आउर बुतुन गेली। उजर जा ....माटी तेल जा। होली भिंग अंधार ।

तुचो काकी चो निहांय हलवाल - ...ए भीमा, आव रे भीमा, झटके आव आव, गोटोक बड़गा धरून आव। बलतोके सुनुन मंय काय समंजले- ए झगड़ाहा-बफराहा मन तुचो काकी के ढुलान

पेटसत बलुन मुंडेसा बाटे ओरालो अल्टेया ठेंगा के झीकले आउर कोन आय रे ? आले कोन लगे आसे दखाव तो मके बलुन अंधार ने ठटई होते-होते सोरे-सोर गेले आउर उठ्ठान दुय हातेया अल्टेया ठेंगा बरखान दिले। ...मंय काय जाने ता ठेंगा अंधार ने काचो उपरे बरखली बलुन। मंय मरले रे आया बलुन तुचो काकी ठाने चिमिकनाय रे ओगाय होली। काय काजे बल्ले अल्टेया ठेंगा चो मार ने तुचो काकी चो मुंड दुय भाग होली। हेंव मुसा राजा चो खाउन अघालो आउर इसु-हेंव बिगरालो कुकड़ा मिठई आरू चापा लाडु ने चिमनी चो माटी तेल। तेबे मके सुरता इली, एकय तो बले सियान - "संड संड चो लड़ई आउर उसरी बूटा चो मरनी" एबचो चाटा बे, कुकड़ा मिठई चो सुआद के रे रोपटा-रोपटी मन बल्ले मंय, आउर निकरून जात्ते गेले दसापाल बाटे ।

गाँव चो सुखे जीवना

बड़े सहर जगदरपुर ले ठीक एक कोड़ी सोरा किलोमीटर, बल्ले कोस हिसाब ने अंठारा कोस इतरो बेर पड़ती गाँव। गाँव चो नाव रेंगनी भेजरी। गाँव ने जमा तीन कोड़ी तीन घर। दस घर इतरो पंच-पोहनी आउर दुय कोड़ी तेरा घर राजा मुरिया, धुरवा आउर भतरा आदिवासी भाई मन चो। हुनी भीतरे गोटोक घर आसे, मंगलसाय अतवारी चो। आंठ टान डेरी, नंव ठान पाटी, दुलुम बीती चवखंडी, खड़ छानी चो घर, घर संगे उतरालो गोटोक नानी असन कोठा, कोठा ने जमाय बांडी भईंस संगे पांच मुंड गाय बयला, गोटोक माईं छेरी आउर चितरा गांजा संगे पांच-छय ठान कुकड़ा-कुकड़ी।

सोली तीनेक बुनता चो उड़ीद मरान संगे दस रूपिया चार आना पट्टी चो खारी बेड़ा आउर टिरटिरी उपरे पुरानी दुय रूपिया दस पयसा जनपद सेस। कितरय आलादाल खरचा करले बले दादा मंगलसाय अतकारी, आउर मन चो असन काकय मांगे नई, आउर काकय देये नईं। बरख भर खाउन-पिउन, भुती-भाड़ा देउन, नांगरक भंयसा घेनतो पुरती बचाये चे। कसन फेर नी बचातो ता ने? नोहरो-सोहरो चयतू आउर बयसाकू दुय झन बेटा आउर इछाबती गोटोक बेटी।

परू नई परेहार, आमा नुआ खाउन सात दिन गेलो पाछे, इछाबती के चलान काकु घरे बिया करून निला। बाचला चयतु आउर बयसाकू। चयतु गाँव चो आउर पिलामन संगे इसकुल ने, काय तीन गिलास आय कि चार गिलास आय जाले पाठ पढ़ुक जाये

आउर बयसाकू बाप बीता संगे पाठ नांगरेया बेड़ा बूता करे। गाँव चो इसकुल ने कवड़ीराम गुरजी संगे पांच झान गुरूजी मन, एकलो पटेल, सरपंच, तीन झान नाकादार आउर गारड, पोस्ट आफिस काजे कोटमेन आय कि पोटमेन आय जाले आउर गाय बयला के सुजी मारू बीता बघेल जनाप, ढोर डाकतर। गायें रहुन जमा गाँवकारी मन संगे हेल-मेल होउन, बाप भाई असन रहोत। टेम उपरे सबय आपलो-आपलो काम बूता के करत आउर गोटोक दूसर चो सुख-दुख ने साहा होवोत।

होते-होते काचो तो नांगर जितली बूटा फिटली बल्लो असन, बरख के बरख जितते गेली आउर दादा मंगलसाय अतकारी चो बेटा चयतु संगे इसकुल पढुक जाऊ। ढोसेल सरपंच चो बेटा बीता लयखन आंगराजी इसकुल ले पास होउन कालेज पढलो काय, ठाना इनिसपिटर ने भरती होउन जगदरपुर ठाना ले उसरीबेड़ा ठाना ने इलो। कोकटा-कोकटा मेंछा के टेंवुन, गोटोक नानी असन बंदुक के करांड लगे ओरान, ठाना इनिसपिटर चो डरेस आउर टोप लगान जिदलदांय लयखन एक हाट ले हुन हाट फूरा एक हपता छुटी धरून घरे इलो। लयखन के गाँव चो जमा नानी-बड़े आउर हुनचो संगवारी लेका मन डंडीक चाबुन नी छांडला। कोन तो पूछे- कसन ना लयखन, एबचो तो तुय सायेब बनलीसीस ने ? आउर कोन तो पूछे - कितरो टनखा मिरेसे मामा तुके ? लयखन तो फेर काचो बल्लो घाईं "बाप पुरखा ना खाये पान, दांत के गिजड़े जाये परान", "आंठ हात काकड़ी चो नंव हात बीचा" बनान, जिताउन भाती सांगे। बले- "काय के पूछसे आजा, पुलिस टेरनिंग काजे रायपुर सहर ने पठान रला हो - बाप रे हुन सहर, इसकुल कालेज मन ले आगर हुता खेल खेलाओत आउर रेप राइट कराओत। मान्तर काईं होवो, पढ़तो बेरा पढुं आरू

बाकी टेम ने खेल बेरा खेलुं, बुलते बेरा बुलुं आउर राती-राती रोज्जे सिनिमा दखुक जातोर, होटेल ने जाउन मिठई खाउक भावले मिठई आउर मास-भात खाउक भावले मास-भात। नानी-सुनी हमाल बरन चो लोक आउर रिकसा बीतामन तो सलाम सायेब, राम राम जनाप आउर नमस्ते साहेब बलुन-बलुन थकान पकाओत। भारी मान करोत हो हुता आमके जाले। लयखन आउर चलान चो गोठ के चयतु फेर पकी धियान करून सुनते रहोत? चयतु चो धियान आपलो बाटे गेली, चयतु बिचार करलो आउर आपलय पूछी होला - सते आय तेबे ना चयतु? इसकुल ने गुरजीमन एई लयखन के रोजे इसकुल नी एतो काजे आउर पढ़ुक नी जानतो काजे कितरो-कितरो मारते पेटते रला, मान्तर बाप चो बेटा लयखन कसन तो ठेगल-मसक करून पास होलो काय दखा नूं, कसन-कसन गोठेयाउक जानलो। तुई पारले इनाम बस्तरेया भोकवा चो भोकवा चे ठेबलीस। ए ना चयतु ? तुय बले तो दसवीं किलास पाठ पढ़लीसीस? इतरो-इतरो पढ़े-गुने होउन दख नूं घरे बसलीसीस। सहरे जा, आउर काईं सरकारी नवकरी खोज। किटलाहा लुंगी आउर फटाहा सलुका ने मनुक चो मान घटुआय। सहरे जंगा फुलपेन्ट आउर पूराबांही चो कुड़ता ने मनुक के तोरा भर पानी चेगुआय। जा तुय बले सहरे भाग।

रात भर चयतु के कसन-कसन तो लागे, दूसर दिन बिहाने उठलो चयतु आउर आपलो बाप बीता के जमाय गोठ के सांगुन मांय-बाप के बल्लो- बाबा, काली लयखन सांगे ना आमचो सरकार पाठ पढ़लो लेका-लेकीमन के गाँव चो होओत कि पारा चो, नवकरी देयेसे मने आउर नवकरी नी करतोर होले आपलो काईं

रोजगार बेभार करतो काजे पांच-पांच हजार रूपिया बले मिरूक सके, बलुन बलते रलो। इतरो बड़े पन पाउन लयखन झूट गोठ के थोड़े सांगेदे। मंय बले सहरे जायंसे, गाँव ने रहुन माटी संगे माटी होलो काजे काई लाभ निहांय बल्लो, आउर तंग तियार होउन आपलो आया बीती के टोरा बिकलो तीन सव रूपिया के ठगलो काय सहरे बाटे फसफस।

सहरे फेर उर भेट-बाग भेट, फोटकी सिराहा चो बेटा बीता रतन भेटो ता। रतन संगे चयतु जाउन लछमी लाज ने गोटोक बाखरा के छय रूपिया रोज चो हिसाप ने किराया धरलो आउर हुता रहुन होटेल ने खाये आउर लाज ने जाउन सोये। लयखन चो सांगलो हिसाप ने सहर गाँव चो रसाबसा-हिंडाबुला के दखुन फेर चयतु भारी हरीख। नवकरी खोजू खोजू छय-सात महेना होउन गेली, घर ले आनलो रूपिया बले सरते इली, मान्तर नवकरी कोनी लगे हाजुन रले तो मिरती कि नी मिरती? एक तो कहांय नवकरी मांगुक गेले .'इनाम भोकवा हय ...ये किया नौकरी करेगा' बलुन खेदुन देओत नाहले फेर कोई जागा नई हय बलुन देओत।

लटेपटे छय महेना कड़का हिंडा-बुला करतोके चयतु के जज साहेब घरे चपरासी काम मिरली। सरकारी डरेस पट्टा संगे सोरा कोड़ी चार रूपिया महेना टनखा मिरे। एक तो ए माहांग दुकाल चो दिन। चार-आंठ आना ने सहरे चरोटा भाजी बले नी मिरे, तीन रूपिया किलो गहूं पिसान, पचीस रूपिया घर किराया, सव दुयसव चाउर साग आउर दारू घेनतो ने खरच होये। उपर ले दिन रात साहेब घरे ...घर बढ़ातो, पानी आनतो। नवा-नवा बरख तीनेक चपरासी काम ने चयतु जीव के कठलाउन सहर गाँव चो सुख के पाउन दखलो।

मुंड भर लागा बोड़ी होवतो के पाछे चेत इली। बल्लो - चूला ने जाओ ए नवकरी आउर सहर चो सुख। सहर ले तो गाँव चे निको रली। बेमार-सेमार, जर-मुंड पड़ले एथा कोनी पुछन्ता निहात। घरे काईं नाहले आया मुंड लगे बसुन मुंडे तेल के ठोकुन देये। ए सहर चो सुख ले तो गाँव चो सुख आगर मिरेसे बल्लो आउर दिनक फेर चयतु सहर के मारून लात आरू गाँव बोहड़लो ।

सत्ते आय सहर गाँव ने रतो लोक ले तो आमी गाँवकारी लोक जुगे सुख ने आसुं । आमचो गाँव मन ने सहर गाँव मन चो असन झीका-टाना, घुड़का-चमका, चोरी-हारी, ठगा-ठगी, डंड-दुख काई निहांय। गाँव ने रतो लोक, कोनी मनुक चो काईं जात होओ सब दादा भाई होउन गोटोक दूसर चो साखा होउन आपन कमान खुद खाउंसे आउर सहरे रतो लोक मन के बले खोआउंसे। गाँवकारी चो उबजावलो तीज मन तो सहरे जायसे आउर सहरे बनलो जिनीस मन के आमी गाँवकारी घेनुंसे । नोहांय ?

दुय बात होयदे

मुंडा हात ने हात पांचेक डेंग, सिलक असन पातर कठेया, एकलो मनुक केंव ले तो एते रलो, बाटे हुनचो संगवारी संगे भेट होली। संगवारी बीता पूछलो कसन भाई आजकाल काय बूता करसीस, काहां आसीस तुय ?

पूरे ले एउ बीता बल्लो- काई बूता नी करें ठेलाहा आसें। काली तक ले तो मोचो बले तीन ठान मोटर चलते रहे, मान्तर आजि मंय तीनों टरक के जुआ ने हारून दिले ।

हुनचो संगवारी बीता आपलो गोठ के सुनुन, भारी खिसियालो आउर बल्लो- सहर चो डाक बंगला ने तो मिलटरी ने भरती करतो काजे बड़े-बड़े सायेब मन जब्बलपुर ले इलासत, तुय असन काय काजे नी करीस! ठेलाहा बुलतो पलटा तुय बले जाउन हुता मिलटरी ने भरती होले नी होती? बांवस लाठ असन डेंग तो आसीस ।

हुन मनुक हुनचो गोठ के समंजलो आउर बलेसे- मिलटरी ने मंय भरती होउक तो सकें, मान्तर मंय मिलटरी ने भरती होले जाले दुय बात होयदे । संगवारी बीता बल्लो- काय काय दुय बात होयदे ?

तेबे हुन बल्लो- मिलटरी ने भरती होले एक तो मके काईं-जाईं सुधरातो काजे मेकेनिक लाइन ने संगादे, नाहले फेर लड़ई ने पठादे। बंदुक-बन्दुका के सुधरातो बाटे पठाला जाले तो ठीक आय, लड़ई बाटे पठाला जाले फेर दुय बात होयदे । हुनचो संगवारी बीता पूछलो- हुन कसन? लड़ई ने पठाले काय दुय बात होयदे ?

हुन बल्लो- लड़ई ने गेले, एक तो मंय एकला झन दसेक के मारेन्दे, नाहले फेर मंय खुदे मरेन्दे । मंय झना चारेक के बले मारले जाले तो कोनी पिराव निहांय, मान्तर मंय मरून गेले दुय बात होयदे।

संगवारी बीता बल्लो हुन कसन ? तेबे पूरे ले एउ बीता सांगलो- मंय मरून गेले एक तो मोचो मढ़ा के खोदरा खनुन गाडुन देदे, नाहले फेर आईग ने डसान देदे । मढ़ा के गाडुन दिला जाले काई निहोय, काय काजे बल्ले माटी चो चोला आय कुहुन-सडुन माटी ने मिसुन जायेदे मान्तर काहांय आईग ने डसाला जाले मास इतरो तो जरून जायदे मान्तर, हाड़ा इतरो बाचुन जायदे आउर हाड़ा काहांय बाचली बल्ले, फेर दुय बात होयदे ।

हुन काय दुय बात होयदे ? हुन चो संगवारी पूछलो ?

तेबे हुन बल्लो -जरलो हाड़ा ने फेफल असन बीती फासफोरस नांव चो तीज रहेसे हुनचो लागुन हुन हाड़ा चो काईं सरकारी खत बनेदे, नाहले फेर साबुन बनेदे ।...बाचलो हाड़ा चो सरकारी खत बनाला जाले तो ठीक आय कोनी किसम चो फसल उपजावतो ने काकय सायला देयदे, मान्तर काहांय साबुन बनली जाले, फेर दुय बात होयदे ।

संगवारी बीता बड़े धियान करून सुनते रहे, ...पूछलो हुन कसन ? तेबे हुन सांगलो साबुन बनले एक तो हुन जरलो हाड़ा चो नाहातो बीती साबुन बनेदे, ...नाहले लुगा-पाटा काचतो बीती साबुन बनेदे ?

हुन बल्लो - हवो हुन तो सत्ते आय, तेबे फेर हुनचो संगवारी बल्लो - कपड़ा काचतो बीती साबुन बनली जाले तो ठीक

आय काईं नी होय। मान्तर नाहातो बीती साबुन बनली जाले फेर दुय बात होयेदे ।

काय दुय बात होयेदे ? बलुन पूछतोके हुन बल्लो - नाहातो बीती साबुन बनले हुन साबुन के नाहातो बेरा कोनी मनुक पीला आपलो देहें के लगड़ेदे, नाहले फेर कोनी बायले पानी घाटे हुन साबुन के लगड़ी होयेदे, मनुक पीला आपलो देहें के लगड़ी हायेदे जाले तो काई पिराव निहांय, मान्तर कोनी बायले लगड़ी होले फेर दुय बात होयदे ।

फेर हुन मनुक पूछलो - हुन कसन ? तेबे हुन बल्लो - बायले चो हाते पड़ले एक तो कोनी मोचो मांय बरोबर डोकरी हुन साबुन ले आपलो देहें के लगड़ेदे, जाले तो कांई पिराव निहांय मान्तर ...हुन बासना साबुन ने मोचो असन कोनी धंगड़ी लेकी आपलो देहें के लगड़ेदे जाले मके तो ....गुतली लागेदे ....हुनी काजे मंय ठेलाहा आर्सें ठेलाहा रहेन्दे, मंय मिलटरी ने भरती नी होंय । बल्लो आउर कोन तो बाटे फस-फस ।

मंद चो मइमा

भंयसा अंधार राती, नावा सिखनेया पिला चो थुप-थाप, थुप-थाप हिंडलो असन, रेंगतो के दखुन धनसिंग एतो लोक के चिनुन बलेसे ...कसन ना डोमू गुलाय रात मांजन किंदरलो असन कोन बाटे बुलसीस, डोमू बलेसे- जनदरसन बाटे जाउन रले। जनदरसन ? होय ना, जनदरसन बल्लो ने मनुख मांदी चो झोप। आजिकालि देवगुड़ी ले आगर मंद भाटी ने झोप रहेसे । जोन दिन ले गाँव चो हाथ रांदा बीती बंद होली से हुन दिन ले सहर चो मंद भाटी ने बरखकार चो मंडई असन अड़बड़ झोप रहेसे । खिंडिक बेर बुड़ती बेरा होली जाले तो नी सांगा गुर ने माछी झुमलो असन भाटी ने झुमुन देसत- कोन आय जाले मके सांगुन रये, तेबे मंय हुन जनदरसन बाटले मंडई झोप के दखुक जाउन रले । डोमू बल्लो- दख भाई आजी तो तुई मनुख दरसन करूक जाउ रहीस काली गाँव कठा कोन लगे पड़ु रसे आउर तुचों टोंड के कुकुर मन चाटदे, गाँव-पारा चो लेका-लेकी मन तुके दखुन गीत गावदे....

"बाड़ी कठा-कठा, बाड़ी कठा-कठा घुसरा तुतेसे,
सड़क कठा पड़लो मतवार चो टोंडे कुकुर मुतेसे।"

हुसन मवका नी एये , बतलक मंद चो मइमा काय आय तुय नी जानिस धनसिंग । मंद चो मइमा काय आय, आले सांगुन दख?

धनसिंग बल्लो - हुन मांदर गाँव चो मतवार पटवाड़ी आउर खगु गुरूजी चो किस्सा के सुनलीसीस ? पटवाड़ी के रोजे मंद खोआउन-खोआउन गाँव कठा चो सरकारी चोरनी बनवाड़ी आउर पाँच

एकड़ पड़ेया मरान के आपलो नांव ने लिखालो, आजि हुन खगु गुरूजी पचास एकड़ चो खेतेयार होलो । एदे गोठ-गोठ ने गोठ बाडुआय बल्लो असन जुगे लाफी काहाँ जासिस, नोन, तेल, साबुन बीता गाँव चो बनेया के दख? कितरो सूम आय नाक ने माछी के बसुक नी देये । 'चामड़ी जाओ मान्तर दामड़ी नी जाओ।' मांगा खाया के दुय पयसा देतो पलटा चार ठान गारी देउआय। बयहा कुकुर असन खेदुन नेउआय । मान्तर चेपटी बतल के दखो मने साप चो लपलपालो असन टोंड। खिंडिक असन खोआन दियास फेर दखा मंद चो मइमा के, दुकान चो नी लागतो जिनीस मन के बले निकरान-निकरान देयदे, दखलो तीज के कुढ़ाउन देयदे- "आले पाछे देते रसे पयसा के गाँव ले तुय परासीस कि मंय पराएंसे जा नेउन रा तुचो पीला-झीला के रांदुन खोआव मंय तो आर्से।" आरू हुनी बनेया नी खादलो दांय पिला-पिचका भुके मरलो ने बले दुय पयसा चो उधारी नी देये। आय कि नोहाय मंद चो मइमा ? कसन आपलो मइमा के दखायेसे ।

एक दूसर चो कितरय बले झगड़ा होओ नाहले मुंह बांदा-बांदी रओ, दुनो के बसान चिपड़क मंद के खोआउन दियास मने फेर दखा सात जनम काजे मीत बांददे। आउर हुनी मंद खावतो बेरा काईं उँच-नीच होली जाले मुंड फुटोत ले मारा-पेटा। हुनी काजे सियान मन बल्लासत कि कुकुर के कितरय बले मंद खोआलो ने बले, हुन मनुक नी बने, आरू मनुक मंद के खादलो जाले हुन मनुक, कुकुर उलटुन जायसे।

हारक मंय सांज बेरा हाट बाटले बोहड़ते रले दखेंसे गाँव चो संद चो तरई रेटे दुय झान बसुन मंद के चमकान, लहलट होउन गीत के झाड़ते रहोत । गोटोक मुंडी के गाडुन बलेसे,...राम

राज ने गोरोस खावलु, किरिस्न राज ने घीव, कलजुग ने मंद मिरेसे जीव जाओत ले पिव ।

दुनो मतवार मके दखुन सरपटा पाँय पड़ुन दिला आउर बलसत, ...आव काका आव बस ए लगे बस। राति बेरा काहां ले एसिस काहांय चेपटी डगर जाउ रहिस काय ? मंय बल्ले रे नानजात, मोचो घरे कोनी मंद नी खाओत आउर ना मंय मंद के खायें आउर तो आउर मंय मंद के छिये बले नांई, तुय बलसीस कि चेपटी डगर जाउन रहें, तुके खिंडिक आदक लाज आसे कि नाईं - आपन घर-दुआर के छांडुन भाति गाँव बाहरे तरई कठा बसुन मंद खासीस। दूसर बले लटलटा होउन रये, हुन बलेसे- काय करवां सरकार चो कानून बड़े आय कि तुय बड़े आस? कोनी लगे होटेल, ढाबा ने बसुन खाउक नी देसत। मंद भाटी लग चो चाखना दुकान बीता के खेदला। गाँव-पारा ने खाउक बसलो ने पुलिस बीता मन जुरमाना धरसोत, जुगे गोठियालो ने ठाना-कचहरी कोन जायदे, हुनी डर काजे ए मसेया संगे बतल आरू चाखना संगे लुकुन खाउंसे काका ! पुलिस बीता मन खोजते बुलसत, हुनमन के नी सांगसे आजिकाली मंद अमरूत होलिसे। मोचो मरनारेया बाबा बीता आमके बले, कि मंद के छिवतोर नोहांय आउर मतवार के सगा बनातोर नोहांय काय काजे बल्लो ने मंद खावलो बेरा जसन बूता के बिचार करून रलो ने हुसन बूता नी केबय नी होय, बूता बंयडुन जायेसे। माहा लंदफंद आय मंद ।

गोटोक गाँव चो मुनक रोजे लटलटा मंद खाउन घरे एये आउर आपलो बायले के दुड़दुड़ा पेटे । गाटोक दिने टोंड के फुटाउन बायले बीती बलुन दिली कि हाट जाउन कमाउन, रांदुन तुमके देयेंसे आउर तुमी रोजे मंद खाउन मोचो संगे फोकाहा मारा-पेटा

करासाहास, कोनी लगे कमाउक जातास जाले जानतास पयसा चो मोल के, बलुन । फेर काय आय ता, हुनचो पांय चो रीस एकेदांय तारू ने चेगली आउर रीसे-रीस बायले चो गेबड़ी के पिचकुन दीलो। बायले बीती एकेदांय चिम्मनाय होली। बायले बीती चो जीव गेली ।

"रीस खाय देहें के, आउर बुद खाये जीव के"

बल्लो असन फेर काहां चो मंद आउर काहां चो बायले, घर गोसेया बिहान पावतो के गागुक मुरालो । गाँव-पारा चो लोग जुहला । कतवाल थाना ने रिपोट करून दिलो । पुलिस बीता मन इला । मतवार चो मुंड के आपटुन-आपटुन गागतो के दखुन, लगे रूढंलो लोक मन के पुछला कि कसन ने मरली, काईं झगड़ा-टंटा होला कि, मारा-पेटा होला । हुनचो मतवार संगवारी मन सांगुन दिला कि नाईं राति दुनो बसुन काय मजा खादला, राति बेरा बायले बीती सोवली आउर आमचो दादा बले गोटोक बाटे जाउन सवलो । हुनी सवलो थाने आमचो बउ चो जीव गेली । पुलिस बीता मन बले बल्ला कि सवलो थाने बायले बीती चो जीव धड़धड़ातो बीती थेबली कायनू आउर मढ़ा चो पंचनामा बनाउन भाति हुनचो मनुक के सोपुन आपलो बाटे फसफस ।

बायले मरतोके दुय दिन मतवार मंद नी खादलो मान्तर कुकुर जीव कित दिन टाकेदे ? दिनक फेर लटलटा मंद के खाउन खोर ने निकरून कतवाल आउर गाँव चो लोक मन चो जात के धरूक मुरियालो । पीकड़ रूक चो चंवरा ने बसुन पुलिस, कतवाल आउर गाँव चो लोक मन के गारी देउन-देउन बल्लो- मंय तो मंद खाउन आपलो बायले चो टोडरी के पिचकले । ...सतेयानासिन मोचो

मतवार संगवारी मन के गारी देये, हुनचो बाप चो पयसा के सारोत, कि मंद खावलो पाछे हुनचो मांय-बहिन चो इजित के धरोत ? काय करोत हुन मन ? ...रोजे खाउक बसलो ने हुन मके टोके, हुनी काजे मंय हुनचो टोडरी के जीव जाओत ले पिचकुन दिले ...मरने गेली ! काय होली गुनुक ? कोन काय करला मके ? पुलिस कतवाल सरपंच पटेल काय करला ? कोन मोचो काय के नसाला गुनुक मुखिया बनसत गाँव चो साला मन ।

मंद चो निसा ने आपलो बायले के मारलो आउर निसा चो भोर ने मनुक मारा मतवार आपलो टोंड ले चे गाँव चो लोक के चिचाउन-चिचाउन जाहला करलो । हुनी काजे बल्लासत कि मंद चो मइमा अडरा आय । गोठेयातो लोक, बयमान, ठाबरी मन मंद खादलो पाछे राजा हरिसचंद उलटसत । जुना ले जुना, मन ने गठ बादुंन लुकालो गोठ, बायले आउर बेटा चो किरिया खोआलो पाछे बले, टोंड ले निकरून जायसे ।

सरकारी मोहकमा ने बले मतवार मन चो दांव के जाना। जेके मवका मिरली हुन मन सांगुआत कि कोनी-कोनी सरकारी मोहकमा ने आपलो काईं-जाई काम-बूता करातो काजे सरकारी आफिस किंदरून थाकला से जाले हुता बले चेपटी चो ठुआ बनान दखा । बाबू आफिस चो साहेब काजे मंद चो असन फांदा मंडायेदे कि राता-रात हुन काम होउन जायेदे । थेबलो कागत ने दसकत करून देयेदे । मंय तो एथा तक सुनले से कि आमचो नेता मन बले रात चो अंधेयार ने मंद खाउन बड़े ले बड़े जोजना मन के पास करून देसत। असने मंदाहा साहब चो सेती नेता, मनतरी मन बले सपड्डुन जासत।

पढ़लो-लिखलो नी लागुन असने नेता मनतरी मन मंदाहा साहेब चो लागुन काहांय बले दसकत करून देसत । हुनी काजे पढ़े लिखे मन गोठियाउआत कि 'सरकारी जोजना बतल ले निकरूआय'।

मंद चो मइमा चो लागुन आमचो जनसंख्या चो बाड़ती बले कम होते जायेसे। टुरटुरा मंद खाउन मोटर-गाड़ी चलातो बेरा खिडिंक झाकली कि राम नाम सत आय, फेर बले मंद खावतो लोक के चेत नी चेगे। जेके मंद चो टकर पड़ली बल्ले हुन आया-बुआ, बायले-पिला, जमाय के छाड़ुन देयेदे मान्तर मंद के छांडुक नी सके।

कितरय झान तो सोउन उठले मंद ने टोंड के धोवसत, सोई उठते भगवान चो नांव तो चूला ने गेली । हुनचय लागुन कयेक बरन चो बेमारी आमचो देहें ने डेरा पड़ेसे । सावकार, पयसा बीता मांगा-खाया उलटुन जायेसे । मंद केबय बले आमके बटका धराउन मांगाखाया बनाउक सके । मंद खावतोर बल्लो ने, राकस के सगा बनातोर । आमचो पोथी-पुरान ने बले लिखलोर आसे कि समुंद मनथन बेरा निकरलोर अमरूत के बाटा करून राकस मन के काय काजे नी दिला । मनथन बेरा मसागत तो राकस आउर देवता दुनो करून रला। देवता मन चलाक रला । एकेय बलुआत मंद चो मइमा । जोन एचो फांदा ने फंसलो हुन जीवना भर काजे नसलो ।

घतवार चो घत

करनाकोटिन चो एयले बस्तरेया लाला चो कुड़िया, आउर माता मंदिर चो फयले भिकारी बामन चो घर, जुगे ले जुगे होले एक मइल चो बाट । 'टिरटिरी उपरे पुरानी' बल्लो ने आमा दिने आमा, डूमर बेरा डूमर, आंवरा फरले आवंरा आउर कसि बेलोती के लेका-लेकिमन चो पड़तो इसकुल चो पूरे, पसरा मंडान पयसा जटतो काजे हरमेसा डिडिगोड़ी देउन तियार रये पनारापारा चो तेलो पनारिन चो माँय बीति बांगापालिन डोकरी ।

दिनक काय होलि झिटकी आउर मिटकी दुनों भईन सिलाट बस्ता के धरून पड़तो काजे इसकुल अमरा-अमरी नल खुंटा लगे आंठन्नी बलतो बीति आठ आना पयसा के भेटला । दुनो भईन ने झिटकी बड़े आउर मिटकी नानि। झिटकी तीसरी गिलास ने आउर मिटकी पयली गिलास ने । झिटकी जगले जीता तिरिया चंडालीन चो पाठे बसु रये आउर मिटकी, नानि होले काय होलि ! "नानि मिरी मोटो झार"। पयसा के बेचते खन झिटकी, मिटकी के फुसयाउक मुरियाली। बल्ली- मिटकी आन पयसा के मके देस, तुय पयसा के हजासे, आन मंय फराक चो जब ने संगान रयेन्दे... तुचो फराक ने तो जब बले निहांय। पिसाप छुटि होले तुचो काजे कामरस घेनुन दयेन्दे । आन पयसा के मके देस, आउर तुचो-मोचो सिलट बस्ता के इसकुल अमरत ले तुय धर । मिटकी बले तो कम चतुर नी रये, झिटकी चो चलाकी के समंजली आउर बल्ली- नई काय दीदी तुय बड़े आस, पारले सिलाट बस्ता के तुय धर, पयसा के मंय करांड डोरी ने बांदलो बेसनी नें संगान

रयेन्दे आउर छुटि होले तुचो काजे चार आना चो कारि डाँडा घेनुन दयेन्दे ।

झिटकी बले फेर काहाँ मानती ता ने ? मोचो भईन, मोचो लाड़ो, मके देस काय हीरा बलुन थाकली । मान्तर मिटकी टस ले मस नी होली । होते-होते दुनों भईन चिमका-लाफड़ा बले होवला आउर डंडिक रउन दुनों भईन फेर मिसला । सियान मन ठवकाय बलुआत "पिला बाय बुयबाय।" डंडिक लड्डुआत आउर डंडिक ने मिसुआत ।

मके पक्की सुरता आसे हुन दिन रये लखीमबार। इसपर घरो टाडरा लेका मुंड के खजाय होते खजाय होते पाट-पाट भिड्डुन रये, लेकी मन पाट-पाट भिड्डुन रले कोन जाने, लेकी मन इजिक आदक दे दे रे बलुन । मान्तर मिटकी कोन जिव आय नूं ? "चामड़ी जाओ फेर दामड़ी नी जाओ।" असन सुम कि टाडरा लगे औधले मिटकी हुता ले छू गदबद । लटपट टाडरा इसकुल छुटि होते-होते झिटकी के आपलो पाटेया बनालो आउर बलेसे- सुनलिस झिटकी दीदी, आज नई मँय देहारी काका घरो मुंगफली बाड़ी ने, मुंगफली कोरजुक जाउन रले बाबूर, एक झोरा कोरजले । खावत ले खादले आउर आधो भाग के नई गुर ने पागुन लाड्डु बादुंक बल्लेसें, इसु ले जाते खन नई आया के मांगुआंय बे काय । तुय इसकुल ले इलीस जाले गुर ने पागलो मुंगफली लाड्डु दयेन्दे । इसकुल नेतो काजे देयेन्दे बल्ली से आया । बलुन टोंडे फुटलो पानी के सड़ाक नाय भितरे झिकलो । टाडरा लेका चो टोंडे भरलो पानी झिटकी-मिटकी चो आईंख पूरे गुर ने पागलो मुंगफली लाड्डु आउर मिटकी चो बिनलो

आठ आना पयसा टाडरा लेका चो आईख पूरे सायखात चमकुन लुरून जाय। बलुंबे लेकी मन कोलेया इतरो चलाक रला, जाले टाडरा लेका लगे रली कावरा चो छंद ।

होते-होते लेकीमन टाडरा लेका चो छंद आउर फंद के समजुक नी सकला आउर पावलो आठ आना पयसा के दखाउन बल्ला- एदे टाडरा आजि नईं इसकुल एतो बेरा बाबूराम आमी नईं नलखूंटा लगे आठ आना पयसा पावलूं। हाट दिने आमि बले बाबूराम आया के बलुंआंव आमचो काजे चार आना चो लाड्डु आनुन देस, आउर नईं बाबूराम चार आना चो पाकलो केरा आनतो काजे बलुंदे आउर आमी दुनों भईन बसुन काय मजा खाउंन्दे। मूंगफली लाड्डु आमके बले देउन रलीस जाले आमी हाट दिने तुमके बले देउन्दे । बलु ...बलु तो मुंडे बोहलो साग दोना के कावरा चोरप्प नाय मारलो घांईं । टाडरा लेका मिटकी चो हात चो पयसा के रप्प के मारलो आउर धरी जोड़ ले छू गदबद् । लेकीमन झिटकी आउर मिटकी गागुन थाकला आउर सुबकते घरे अमरला । घतवार चो घत ने, गुर ने पागलो लाड्डु जा ...पयसा जा ।

काना खोजे जोनी ऊजर

गोठ-गोठ ने गोठ बाडुआय, पानी ने बाडुआय धान,
तेलफूल ने पिला बाडुआय, खिलवां ने बाडुआय कान।

सत्ते आय काचो तो बल्लो असन, जुना बरख गेली आउर नावां बरख इली। कएक झान सहरेया लोग मन आजि नावा बरख चो इलो लागुन हरीक-उदीम मनासत। रलो लोक के जमाय बेरा हरीक-उदीम आय आउर नी रलो लोक के काईं नुहांय। "चुछा के कोन पूछा, मोंडरा बीता के पूछा" बल्लो असन, ...ए दिन दुनिया नें, ए संवसार ने कितरो दुख आसे, कितरो अड़नाप आसे आउर कएक बानी चो चिन्ता-फिकिर आसे, हुनके बलुक सांगुक नी होय। चिन्ता-फिकिर चो बाड़ती आसे मान्तर सरती निहांय । मनुख जीव चो जनम धरलो बेरा ले उवाट करवां बल्ले कितरय चिन्ता मनुख के जीव रहोत ले लागलीसे ।

बिहान पावली कि मनुख साग-चाउर, नोन-तेल चो चिन्ता ले धरून, सवतो डसना ने बले चिन्ता चेपाउन आनेसे। "सवलो ठान ले कांडा-पाटी के गनतोर" आउर काली चो हिसाप करतोर कि नाईं फलना जिनीस धरतोर आय, लेकी-पिला काजे फटई, एकटा भंयसा काजे जोड़ी, लेकी बाड़ते एयेसे बिहा काजे बर, लेका जुआन होवलो राती खेलतो बीती जितली बायले चो उपाय-दाव। आपन चो कनेया दुखा, असने-असने जीव रहोत ले मनुख के काईं नाहले काईं जिनिस चो चिन्ता रहेसे ।

'भरलो पेट ने गुड़दामारा' बल्लो असन जिदलदांय मंय, काय मंजा कोनी भंयसा के चिखल डोबरा ने बसुन, चीखल ने लुटपुटाउन आईख के लिमटुन डोबरा ले मुंडी के बाहरे निसकाउन रहुन-रहुन लेंगड़ी के हलाउन, माछी के खेदतोर आउर पागुर करतो बेरा दखेसें। तेबे मंय मने-मन उवाट करेंसे कि कितरो सुख ने आसत पशु-जनावर मन, कितरो नंगत जीवना आय हुनमन चो। बरसा-पानी, चमास-घाम चो चिन्ता नाई कि काय जिनीस कितरो माहांग होली ना हुनचो चिन्ता। हुनके काय चिन्ता, दिन भर लाटा-बूटा, खड़-खूट जमाय के पेट भर चरून कोन लग चो चिखल खोदरा ने लुटबुट पगराते रहेदे ।

आउर ए बाटे चिउंर-चांव टुकनायक पिला-झिला, लोलो-बालो चो पड़ई-लिखई, फटई-लुगा, साग-भाजी, चाउर-दार, हाट-पटन, नोन-मिरी, तेल-घीव चो संगे-संगे बिहाव-बर चो चिन्ता लागली से । उपर ले कोनी पाहनाकारी अमरून दिलो ने फेर नी सांगा। माहांग चो लागुन हाट-बजार जावतो के बले डर लागेसे । कोन जाने गोंदरी आजि काय भाव आसे, लाखड़ी दार चो मोल कितरो होली ? बांगा सेमी, मांडोबांगा सुकाल होली कि नाईं, हे भगवान काय करवां । काय साग आय बुबु आजी कोनी पुछलो ने बलुन देउंसे 'आजी चुला के जर धरली से'। गाँव-पारा चो चलाक लोक मन बले सिरजुन पकी रांदा-बाड़ा बेरा बटकी के धरून तत्प रे भिड़ुन देसत आले बुबु काय साग आय खिंडींक दियास नाईं, आमचो घर गोसेया कालित ले हाट गेलासे फिरून नी इला से, पिला मन कांदा-बोबा होवसत बिन साग चो पेज के नी खाओत बंसबुड़ा मन, आले कसन

करूआंय बुबु तुमी चे सांगा, बलुन तपलो-तपलो बटकक रांदलो सांग के आपलो खाउन नी खाउन, जीव के दुखाउन देतोर मने मने-मन सरापते-सरापते छी रे काय रीस लागे । आले सांगा ए माहांग चो जुग ने मछरी-सुकसी, कुकड़ा-हांसा के ठटाउन कोनी दिने लुकाउन बनायेंदे बल्लो ने गाँव-पारा चो डर आले घरे आपन कमाउन आपन रांदुन आपन खावतो के बले डर होली, चोरून खादलो माहा । ...काय कलजुग आय रे बाबा । दिनक कुकड़ा गाली ले जितुन आनलो कुकड़ा के सेमी माण्डो खाले छोल-छाल करून, खुस्स नाय सांझ बेरा खिडींक बेर के चुकाउन रादेन्दे बलुन आदा-लसुन, मसला-घसला के पिसुन साग के नोन-मिरी संगे भाजले आउर पानी के रोकाउन झपके चुड़ो बलुन ढाकना के ढाकुन दिले, ढाकना ढाकले, दुय किसम चो लाभ मिरेसे पहिल तो ए कि साग झपके चुड़ेसे आउर दूसर ए कि मसला चो बास भंडवा ले झपके बाहरे नी निकरे । मने-मन बिचार करले खुबे दिन होली पिला मन चो टोंड के सुखाउन, चुच्छाय डारा-भाजी ने दिन बुड़ली। डंडीक टाका रे पिला मन, साग के बघारले डंडीक चुड़ली जाले भात बाड़ुन देयेन्दे। पिला मन हुन लगे रले तो हुंकारदे । चिम्म-चाम! पिला मन रोजे दिना चो टकर असन खेलुन-कुदुन कोन लगे थाकुन रहोत, टेम उपरे भात-साग मिरलो ने होती, आपन-आपन डसना ने भिड़ुन दिला ।

दीदी आजि गुलाय पारा माहाकली काय सांग आय जाले खिंडीक दियास आंय ! मंय खिंडीक डोंगाघाटीन काकी घर ले होउन एयेसें । होली काय बूता लुकाउन खाउआहास ता? हुनी काजे

मंय बलुआंय 'करांडक पानी भीतरे कोनी नी दखसत बलुन लोहो के खाउन हागलो ले ने बले हुन धीरे ले उपकेंदे चे ।'

दूसर दिन ले कान धरले "मछरी-सुकसी चो नांव ने बामन उलटले अच्छा आय।" खाउक भावले खुटनी भाजी, पहिल पानी चो पिलखालो चरोटा भाजी नाहले सुनसुनेया भाजी चो पिलखा के दखुन गोटोक मुंडी लसुन-मीरी संगे बघारून, दुय ठान मांडो बांगा के पकाउन रांदुन रलो ने मरलो मनुख चो टोंड ले बले सर्र के पानी नी फुटली जाले बलासे, मोचो नांव आय बीजापुरीन ।

जीव तो आय बानी-बानी, रकम-रकम चो तीज के खाउक खोजेसे । मान्तर खोजेसे बलुन दखलो तीज के कसन खाउक होयदे। देहें-पांय के बले खावतो पूरे धियान देतोर आय, काय बीती देहें के लागेदे आउर काय बीती जिनीस देहें के नसायेदे । खावतो काजे आउर जीवना चलातो काजे तो भगवान मनुख के नाहले ये संवसार चो जीव के घड़लीसे । हुनचो जीवना चलातोर आउर पेट पोसतो काजे बले उवाट करून ए संवसार ने पठालीसे आउर बानी-बानी चो जीव-जियाद आपलो-आपलो जीवना के चलासोत ।

काचो तो बल्लो असन -

काना खोजे जोनी उजर, साहेब मोटर गाड़ा,
पाईक खोजे बोकड़ा-कुकड़ा, कुकुर खोजे हाड़ा ।
नेता खोजे मनुख मांदी, काकड़ा खोजे बिल,
भालु खोजे ओंडार गुड़ा, बांदलो कुकड़ा के ढील ।
बांदलो कुकड़ा के ढील खोजेसे टोंड बानी-बानी !

जीव आय कि नी मांडे । डेवना ने कुकड़ा के बांदुन कोन आमट, भाजी संगे भात खायेदे ? "दुय दिन चो संवसार आय,

आजि मरले कालि दुय दिन ।" ..."रहे जोगी मंदे-मास, नी रलो ने पड़े उपास ।" हुनी काजे बलुआंय जेचो घरे आजिकाली चिंगड़ी-मछरी, बोकड़ा-कुकड़ा आसे जाले हुन बड़े भायगमानी आय कलजुग चो राजा आय । मके बले कोनी दिने दईब चो परताप ने मिरलो ने रहोत ले रोजे ठटाउन खायेन्दे आउर फाटलो खतड़ी के ओड्डुन काय निमान आईंख के लिमटुन ढुलुन देव । ए सुख ले आगर कोनी आउर दूसर सुख आसे संवसार ने ? मंय बलेंसे निहाय । "करम रले तो करमंगा आय नाहले भंगभंगा आय" मंय काय सांगेन्दे गाँव-पारा चो लोक मन ...हुनमन सब जानोत, भगवान चो अन्तरजामी असन ।

डेवना ने बांदलो कुकड़ा काजे मंय आईंख उघाड्डुन दिन-मंझने डंडीक काजे सपनुन दखले बिन रस चो रसरसा रली आईंख उघाड़ले फसफसा होली । डेवना चो बांदलो कुकड़ा असन-तसन कुकड़ा नोहांय हुन लड़ातो बीती कुकड़ा आय, खाउन दिले हुन कुकड़ा चो बंस नी बुड़े ? हुनके खांक खाले चेपाउन गाली बाटे जातोर आय पाड़ भिड़ली जाले तो अच्छा नाहले चिपड़क-चिपड़क सांज बेरा चो मांझ । फेर झालीआना चइत परब आउर मारी रोसोना चो गीत कसन सुनुक नी मिरे । कोन बलेसे मोचो गाँव सहर होली, जीव आसे आजी बले बांडाबाग आउर जय गोपाल साकी आसत हुनमन कि, आमचो बस्तर ने काय होली ...आमके मतवार बलता हय साला । हमारा अंडखा ने चे तुमारा बोट हय, गोपाल-डीली तुमारा हय सिकनेया नई हय ...हमारा प्ररबीर चन्द को गोली मारने बाला अं, कुकड़ा बले फुसकता हय धर ना ...एचो जात के । बलुन हारक फेर घसरलो ।

निसा चो भोर ने गुलाय बाट इजित जा, पयसा जा, जीव जा, देंहे-पांय चो सोर नाई ! काय करू आहास 'बिन गोसेया चो गाय रन-भन जाय' सोर रलो लोक के बलुक होउआय। ठटई होते लटपट घरे अमरले हारक झगड़ा चो मूर । गुलाय गाँव-पारा अंदल कावरा कोल्हार । मंय आजित ले समजुक नी सकले निसा ने कितरो काय बल आसे जाले डंडीक काजे भुकरून पाछे फेर हुनी कुकुर असन हाड़ा डगर जमाय बानी चो चिन्ता ।

मंय बले आजि सहरेया मन चो दखा-सीखा पाड़ ने बलेंसे कि काईं बले निसा होवो हुन देहें काजे अच्छा नोहांय, इजित, मान, धन, गाहना-गुटा, पयसा, घर-दुआर, बायले-पिला, बेड़ा-खाड़ा जमाय बुड़ुन जायेसे हुनी काजे ए जुना बरख ने सपाय मिसुन किटका टुटाउन किरिया खाऊं कि निसा चो टकर के जुना बरख ने छाड़ुन नांवा बरख ने नांवा बुता-भयना के धरून सुखे जीवना ने जीऊं, लोला-बालो के दखुं, धन चो बाड़ती होवो, पिला-झिला मन बड़े बाड़ुन नवकरी करोत, कमाउन आनोत ...तुमचो देहें आउर बायले दुनो अच्छा रहोत, महादेव चो परताप ने सबे तीज चो बाड़ती संगे-संगे बायले चो बले बाड़ती होवो ...सकत रलो लोक मन पांच-पांच ठान बायले आनोत, घरे ठान नी पुरलो ने दुआरे सोओत, लुकुन कोनी लगे फेर निसा करलो ने पांचो बायले चो हाते दुड़दुड़ा मार खाओत ।

जय बस्तर, जय मांय दन्तेसरी ।

हाय रे तुचो ढालेया खोसा

गेलो बरख कलार पारा ने बिहाव होली । सगा कुटुम्ब, गाँव-पारा, जात-अनजात, पिला-सियान,सबय के नेवता मिरली। सुकुरवार मांडो, सनवार तेल आउर अएतवार दिने लगिन मारून सगा के दोनाएक पेज । खिडींक लग चो नाता-गोता घर मन ने दुय दिन पूरे अमरून काम-बूता के निमड़ातो काजे बले, नेवतारी मन के सांगुन रला।

पिला-झीला मन चो हरीक के मंय काय सांगेन्दे ता ? डोन्डकी, बोण्डकी, चिटकी, मिटकी, चेड़ो, पारो, सुकलाल, मिरघत, लखमु, समुंदसाय आउर करनाकोटीन आता घरो बांडा लेका-लेकी असन, टरक-मोटोर ने एके टरक लेका-लेकी मन जुहुन रला। गोहदायक लेका-लेकी मन तो बजनेया-मोहरेया मन लगे भिड़ुन रला आउर जालीआना पाड़ के उधलुन-उधलुन नाचला ।

आजिकाली बिहाव-बर चो समया बले एते एयेसे। देव-उठनी सरली। बिहा-बर होवतो लेका-लेकी मन खुसखुसा निकोय देव उठाला होती । धान कटई सारून कोनी-कोनी गाँवकारी-सहरेया लेका-लेकी, धंगड़ा-धंगड़ी मन माहला जातो उवाट करदे । मोचो जानती हिसाप ने एसु आमचो पारा ने, काईं नाहले चारेक झान धंगड़ा मन चो बिहाव होयेदे। एसु आमचो पारा ने लोक चे लोक एदे । बाजा-मोहरेया मन चो कुडुमछुट बिहाव-पाड़ बाजली, जाले तो नी होय घरे बसुकलाय। नाचते राहा कितरो नाचतो मन आसे जाले । काकय सांगा नाईं, गोटोक गोठ खुस-खुसा सांगेन्दे । तरई जालो बेरा आमचो आसना करेया मामा

चो बाड़ी ने दुठान बड़े-बड़े, करेया-कसी बोकड़ा के बांदलो के दखलेंसे, दखलोदांय ले जीव हुन बोकड़ा चे बाटे आसे हो । केबे आय जाले हुन मन घरो बिहाव, टप्पा जोड़ेयालासत आमचो मामा बले।

केबे-केबे तो असन लागेसे ए बिहाव-बर बले नंगत नोहाय हो ! नी होओत ले आजि बिहाव होओ, काली बिहाव होओ, असन लागते रहेदे, मान्तर मंय दखलेंसे रलो-नाहलो लोक चो अस-तस बिहाव होली जाले खट-खट चे आय । नुआं बायले के पाट-पाट धरून बुलते राहा, ...हाट गेलो ने हाट बुलाउक नेतोर आय, केबय लुगा घेनुन देस केबेय चुड़ी-फुंदड़ी घेनुन देस। कोन लगे मंडई होयसे जाले, मंडई दखाउक नेतोर आय। बायले चे आय बलुन गुलाय रात-दिन सायकल ने बोउन-बोउन बुलते चे रतोर नंगत आय? नावां-नावां नव दिन, कसन सुनील बाबु बल्लो घाईं होयदे फेर।

"कदली गछ ने भंयसा बांदा, अंधार माने चो रांदा"

बल्लो असन जेचो घरे अबगो गाड़ायक पिला-झीला मन आसत जाले तो नी सांगा, ...महादेव बाबा हुनमन चो मांय-बाप के फाबलो बेरा घड्डुन रये कायनूं तेबे तो आय, ए जुग ने बले हुनमन चो मांय-बाप के जुगे मसागत करूक पड़ली। कोन-कोन तो बलुआत बले कि "मसागत नाहलो मुसा मास बले खाउक नी मिरे" बलुन। आजिकाली ए ठसा-कहका उल्टा पड़ेसे, कितरो मसागत करून मांय-बाप पिला-पिचका के जनमाला, ...मसागत करून रले मास खाउक मिरेदे बलुन। ए कलजुग चो बेटा-बेटी कोन लग चो मुसा मास आनुन खोआदे ला ? उल्टा मांय-बाप चो मास संगे-संगे जीव के बले खावसत । ए गोठ के जानतो लोक मन पतेयादे ।

मंय बले दूसर गाँवकारी धंगड़ा मन असन सांज बेरा होवलो ने आपलो संगवारी मन संगे सोर-सुतुर, तंग-तियार होउन नाट दखा गाँव-घर बाटे भिड्डुन देयें। केबय-केबय तो नाटगुरू चो सांगलो हिसाप ने नटवा पिला मन संगे बले नाचतो बाटे बले भिड्डुन देयें। दूसर जुआन लेका असन मोचो बले तो जीव आय खेलतो-बुलतो दिन आय। कोनी कितरो काई बलो, दिन भर भुती-कुली करून राति बेरा काहाँय जीव भुलकातो काजे निकरो, तो दूसर लोक के मजीगता गोड़ के लमातोर नोहांय। आली-पाली गाँव चो काहाँय मंडई घरो होओ कि हाट-बजार होओ, मोचो संगवारी मन बलुआत कि तुचो नी अमरलो ने हाट-मंडई भरलो असन लागु नोहांय। हुसने आली-पाली गाँव चो धंगड़ी मन बले पाछे काहाँ रदे ता, छेरी-बोकड़ी चो गोहड़ी असन अमरून लेका गोहड़ी चो पाट-पाट, पाट-पाट मुचकी मारून-मारून बुलते रदे। कोन लग चो कदली-केरा, कोन लग चो टोंड भर-भर रचालो बीड़ा पान के, छेरी चो आंटी चपललो असन चपलते-चपलते दिन-मंझन बुड्डुन जाये।

गुलाय रात-मंझन बुलतो के दखुन मोचो आया-बुआ बले दिनक बिरबिरा होउन ठेट-ठेट अमराला कमानी ना धमानी, गुलाय बाट-बाट, खोर-खोर बुलते चे रहेसे बरमसेया, मांय-बाप नाहलो असन। भले होली कुकुर जनम नी गेलीस, खोर-खोर बुलतो काजे। घर-बाड़ी चो सुरता निहांय, तुचो उमर चो लेका-लेकी मन दखनूं दुय-दुय पिला चो मांय-बाप होला। पहारक नांगर बले धरूक नी जाय दखानूं, ...काय के भुकरते बुलेसे जाले। असन रोपटा-रोपटी मन मांय-बाप के कमाउन खोआदे बलासाहास पाहारक बाप चो बूता

के करूक लागेन्दे बलुन नी बलोत, बाप चो कनेया बरकस रहोत ले मास–भात मिरेदे पाछे तो मरलो मांय–बाप चो, ...नी सांगा काय–काय नी बल्ली मोचो आया । हुन दिन ले काहाँय ले फिरून इले मके रोजे दिना ठेट–ठेट अमरातो नांवा बुता के आया धरली । पेज–पसया खाउन बाड़ी बाटे हाथ धोवतो काजे निकरें, आउर पानी कसेला के कुंदरू डीरा लगे मंडाउन बाड़ी कुदुन खोर लगे निकरोत ले दुय अखरी सुनें ।

असन होउ–होउ दिनक लाजकुरीन बुटा के बले लाज लागली आउर बेसरम बुटा चो सिंग आंकरली। काहाँय सोर–सुतुर होउन घर चो लो जमाय रूढुन रहोत, माहला जातो गोठ निकरली, हुनमन चो गोठेयातो बेरा मंय फेर तप्प रे भाजलो मूंग ने गाजा होवलो असन हुदलय दांय मरता ता । कपाट आड़े होउन सुनेंसे हुन मन चो गोठ। गोठ निकरली ...नाईं लेका जुआन होते जायेसे, खोर–खोर, गाँव–गाँव बुलते रहेसे, अच्छा नोहाँय । थर पड़लो ने काहाँय बले दिनक काजे बाजा बजाउन देउं, घर–बाड़ी चो कमानी के बले दखेदे, पाहारक नांगर बले धरेदे। काईं नाहले मांय चो बूता भयना, रांदा–बाड़ा के बोहारी दखेदे, मांय बले कितरो दिन ले खटेदे ता। मांय बले तो कोनी दिने बोहारी रली। मांय–बाप चो जीव समया–बेरा के दखुन आपलो सकत रहोत ले बेटा काजे बोहारी आनतो काजे देवगुड़ी ने जाउन डिडीगोड़ी देउन पांय पड़ला। बदना बदला, मने–मन सुमरला चिंया नाहले काटाखाई बले देउन्दे। बेटा चो घर कसने बले बसो।

पूरे ले एतो दखुन मके पूछला– कसन रे काकड़ा खाया, खोरलही कुकुर असन दिन भर खोर–खोर बुलते चे रसे ? तुचो मेछा–दाड़ी आंकरली काय, केबे घर चो चेत एयेदे ? तुचो संग

चो ए लगे गछ-खुट निहाँय। तुय एबत ले कीटका ने खासीस। बुआ पूछेसे - उपर पारा चो हुन तेतर कुदा टोंगेया लग चो हुन लेकी, दखतो ने बले नंगत आसे। तुचय असन खिडींक खुजा बरन चो आय दुनों अच्छा फोबासे कसन जातोर आय माहला करूकलाय?

मान्तर सत्ते सांगेसें ना, मोचो मन कतवाल पारा चो हुन रयमती लेकी उपरे आसे बुआ के कसन सांगो बे। आले, एसु काजे रओ ता बुआ परू लगले करवां, बलुन बरस भर काजे फेर तो ठगले। रयमती के दखलो दांय ले जीव असन कलबल होली से दखलो दांय ले जीव नी मांडेसे । काय निमान छकछक्का पंडरी लेकी दखलो लोक मन भकेयाउन दखदे। काय के कितरो बलासे जाले एदे बीजापुरिया पाकलू सियान चो बल्लो घाई -

कोन रूप ने दईब तुके कितरो बसुन घड़लो ?
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, काय के कितरो बलो,
सुआ नाक असन नाक तुचो, चिंगड़ी चिंगड़ी चुन्दी
टोडरा भरते रूपिया माला, अंडखी मन ने मुन्दी।
कजरी कजरी आईख तुचो, जोन बरोबर थोमना
सारस असन लाम टोडरा, खोसा ने माहके दवना,
एदे रे बया काकड़ा खाया, खोसा ने गुपुन गेली
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, जगले जितुन गेली।

सुंदरमनी धोती मारून गाती, बाहां ने नांगमोड़ी,
खोदरी गाले मुचकी मारा, कान चो खिलवां जोड़ी,
कमलापाक असन चिकन देहें, देहें ले सुन्दर नाभी,

पातर कन्हेया सपुर अंडखी, जसन धान चो गाभी।
तुके दखुन मुचकी मारसत, जमाय इलो गेलो,
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, काय के कितरो बलो ।

झुमकी झुटिया बाजनी पंयड़ी, हाथ भर भर चुड़ी,
केरा खम ले आगर सुन्दर, माहन्दी रचलो लेड़ी,
सोरा बरख चो कुवांरी कनेया, मयना असन बोली,
दखलो दांय ले तुके रे दोन्दो, जीव कलबल होली,
कोन रूप ने दईब तुके कितरो बसुन घड़लो ?
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, काय के कितरो बलो ।

बिजली असन उजर रानी, बादरी असन केस
डंडिक ठेबरे धरमकारी, खिंडिक चुमुक देस,
तुचो लागुन मोचो जीव जाओ, कोरा ने बसान दखेन्दे
पांच पड़ले पचास देयेन्दे, डांड पड़ले सहेन्दे,
रिग-रिग-रिग पातर ओंटी, गोजेया ठोड़ी ने फोबली,
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, काय के कितरो बलो,
कोन रूप ने दईब तुके कितरो बसुन घड़लो ?
हाय रे तुचो ढालेया खोसा, काय के कितरो बलो ।

काय के कितरो बलासे जाले । कतवाल पारा चो रयमती काजे, बरख भर गेलो पाछे निको देव उठाउन घर-पारा चो जमाय सगा मिसुन भाति माहला गेलूं। सगा जानति हिसाप ने 'पइतभात' हुता रांदुन खादलु आउर निलो सोन चो मूंदी के रयमती चो अंडखी

ने पिंदाउन दिले । पिंदातो बेरा नी सांगा हो सुकमती चो मुचकी मारतो के, थाने मंजी गाले खोदरा उलटुन जाय ।

नीलो बोकड़ा के नंगत मसला-मसली लगाउन बनान खादलु आउर जमाय धंगड़ा राशि संगे माहला करून एते इलु ।

पाछे बिहाव-बर होली आउर एबत ले काय निमान अस्तीर ने जीवना करूंन खाउंसे । हुन दिन आय आउर, आजि चो दिन आय, माहला गेलो गोठ मके टप्पा सुरता आसे । मान्तर आजिकालि चो धंगड़ा मन चो माहला जातो के दखेंसे, आउर मने-मन उवाट करेंसे कि हारक फेर माहला गेलो ने होती तेबे ? आले ना धंगड़ा मन, देवउठनी सरली, माहला जातो दिने मके बले सुरता करासे, तुमचो बिहा ने मंय बले काकड़ा नाचलो घाईं, चेरक-चारक, चेरक-चारक नाचुन दखेन्दे खावतो-पिवतो बीती तो जमाय बेरा लागलीसे से बे । दखा मके भुलका नाईं आजि काजे इतरय रहो बे माहला दिने तुमचो घरे हारक भेट-घाट होवलों ने गोठावां जुहार ।

बयहा कुकुर चो बिस

सियान-सजन मन केबय-केबय बलुआत कि - "मसागत नाहलो मुसा मास खाउक नी मिरे।" बलतो गोठ तो सोराआना सत्ते आय। आजि चो जुग ने कोन आय जाले बसलो लगे खाउक देयेसे। मांय-बाप बले पिला रहोत ले कमाउन आनुन खोआसत, मान्तर खिंडिक बड़े बाड़ले घर ले बाहिर चो बाट के दखासत। मसागत नाहलो तो देहें-पाय, जांगर बले नी चले, पेट काहाँ चलेदे। मनुख चो जीवना हरीक-उदीम काजे आउर मान काजे होयसे। आजि चो मनुख बरन-बरन चो उवाट करून सकत भर मसागत करेसे, मसागत करून आपलो जीवना-खावना के काय निमान रेंगाते नेयेसे। काईं बूता नसली जाले आमी आमचो भाग के दोस देउंसे, आउर बनतो बूता के छांडुन, दूसर चो उपरे तेंगडुन देउंसे। असन ने तो रोजे दिना आमचो कएक बरन चो कितरो काम-बूता नसेसे।

गेलो सनवार दिन चो गोठ आय । आमचो गाँव चो बुधराम सियान सुकलो टेमरू पान के अलटुन चोंगी बनाउन सुरती के भरलो, आउर कोठार लगे धरालो गोरसी लगे एउन बसलो। सुकरवार दिन गाँव चो दियारी दिने, नीको बड़े गांजा संगे, घरे दार बोबो रांदुन रला। गाय-बयला चो खिचड़ी बलतो बीती के खोआउन आपने भाटी सार बाटे जाउन बतलक मंद के आनुन काय निमान, सगा कुटुम के सकत भर खोआलो आउर आपलो बरस भर चो तियार आय बलुन कुकड़ा चाखना संगे मंद के टुरटुरा खाउन गुलाय

गाँव खोर-खोर भुकरते बुललो।...अबड़-जबड़ के खावलो लागुन सनवार बिहान पावते खन ले धरून, ओकी-झाड़ा होउक मुरियातो के बुधराम के डाहा-बिकाल लागली।

गाँव ने सांगतो लोक मन सांगला- काहाँ चो आय जाले अरझटा असन आय, कोन तो बलेसे नाई हो काहाँ चो देव आय जाले, काईं-जाईं नसालो से होती। ...छेरा धरोत ले बनालोर आय। फेर काय सांगासे देव बनातो लोक मन देव-भुत बनाउक मुराला। कोन तो गिरधर सिराहा के हाग देउन देव बसाला, मान्तर देव रले तो उजरेदे ? खिंडिक बले अस्तीर नी होवतो के बल्ला, एदे हो गाँव ने गोटोक बइद बले तो आसे- आले टोकालो माहा बले हुनके दखान दियास नाईं, काय बलासाहास ? जानतो-सुनतो लोक मन बले सांगला, रान-बन चो जानलो चेर के चिनुन आनुन, खोआउन दिलो ने पक्की धरूआय । बुधराम चो घर चो लोक बइद घरे अमरला, काय करता ता पाछे रोग जुरते-जुरेदे बलुन हुता निला। खोड़ेया बइद बले धरसकल आपलो जानती हिसाप ने खमन चो चेर के घोरून खोआउन दिलो। घंटाएक होली ...पाहारक होली रात गुलाय गेली, गुलाय फटई ने गंध धरली, ...मान्तर झाड़ा थेबतो नांव नी धरली। देहें ले जमाय झाड़ा संगे पानी निकरून जातो के रलो बल-बपु बले झाड़ा संगे निकरली। दुय झान धरून उठालो ने बले ठिया होउक नी सकलो। लिड़ींगनाय होतो के घर चो लोक मन कांदा-बोबा होउक मुराला।

कांदा-बोबा चो आरो के सुनुन कोन तो मोचोय असन धरमाती, बाट हिंडतो लोक फड़की लग ले चे बलेसे- क्या हुआ बुधराम? तुम्हारे घर से रोने-गाने की आवाज़, किसको क्या

हुआ? बलतोके लगे उबा होलो लोक कोन तो सांगलो...किया हुआ जनाप, घर का घर गोसेया हय, बल्लो ने खिंडीक झाड़ा जुगे हो गया गुनुक लिंडींगनाय हो गया हय । हुनी काजे कांदा-बोबा करके देखता हय, उजरेगा बोल के ।

जनाप बल्ले ...पटवाड़ी जनाप, गाँव चो पटवाड़ी लगे जाउन दखलो, बुधराम तो निरने असकत होवलो से, तुरते हुन रानी असपताल ने नेउन भरती करालो ...दुय दिन भीतरे बतलक उपरे बतलक पानी असन बीती गुलुकोज बतल चेगातो के थोतना ने खिंडींक पानी चेगली । डाक्टर बले समंजलो ए मनुख सांज बेरा चो पाड़ ने रोजे भाटी-सार बाटे भिड्डुआय बलुन, बुधराम के कचकालो आउर बल्लो, आजी ले भाटी सार चो बाट के छांड नाहले सीदूदा सरगपुर चो बाट के धरसे। बुधराम समंजलो बरख भर चो तिहार आय बलुन नीस करून अबड़-जबड़ चो खावलो लागुन आय, कसन तो जीव बाचली। पटवाड़ी जनाप चो जय हो ...नाहले आजि मोचो घरे लोक जुहुन रता आउर बारा भात बनाउन, खाउन आपलो-आपलो सकत भर मोचो कहनी के गावता बे, कसन तो बोपड़ा बेचारा अच्छा मनुख रये, गाय-गोहड़ी बेरा रोजे भाटी सार चो बाट के धरे आउर खोदरा-ढिपका ने आपटी-कचाड़ी होते घरे अमरे। काकय पयसा मांगे ना, लागा मांगे। आपलो पयसा चो टुरटुरा मंद खाये आउर दूसर के खोआये। काय मंय फंद बलेंसे? नोहाय आले जाउक दियास जीव बाचली धन मिरली।

हारक काय होली पनगाँव चो गोटोक बइद खोर-खोर हाका पाड़ते बुलते रये...जुड़-खोखली चो उपाय, बादमारा उपाय,

मुंडदुखा, कान दुखा, दांत दुखा, टोडरा दुखा, छाती दुखा, पेट दुखा, पिंडरी दुखा, फड़ेया दुखा, करांड दुखा, मांडी दुखा आाउर काय-काय आय जाले संवसार चो जमाय दुखा चो नाव के धरे आउर बले सब चो बादमारा उपाय। कोनी-कोनी दुखयारी मन हाक देओत आउर हुनचो लग ले उपाय के धरोत। बइद सबे बरन चो रोग काजे गोटकी गुंडा के देये, आउर बले सोवलो पाछे आउर बिहान पाहार उठतो पूरे दुय खेप कुआंरी गाय चो गोरोस ने घोरून खातोर आय। दखा उपर बीता बले ठगतो लोक के नंगत दखुआय बलुन, ...हुन गोठ हुन दिने सत्ते होली। काचो घरे आय जाले असने उपाय-दाव देउन पयसा के जटुन निकरतो बेरा गोटोक चामड़ी छांडलो खयरी कुतरी हुनचो पिंडरी के तो हबकली, नी सांगा हुनचो उधल-छटक के। डंडीक काजे हुता मंडई चो झोप असन लोक रूंढला, काय होली, कसन होली बलुन। डंडीक रहुन फटई के उठाउन पिंडरी लगे दखतो के काय दखसत हुन खयरी कुतरी, मुठायक मास के छिड़ाउन कोन तो बाटे छू-गदबद। कोन तो बलेसे, जीव बाचली, कोन तो बलेसे कुतरी काकय लागु नोहाय, ए बइद काईं लागलो बे। कोन तो बलेसे, अं..काईं नी होय, बइद चो उपाय-बादमारा उपाय ...बइद के फेर काय चो डंड आय ता नूं। सोवलो पाछे आउर उठतो पूरे दुय पान खवलो ने छांडेदे ।

एदे गोटोक गराहा होली! काय होली हुन बइद चो जीव बलेसे, मोचो जीव नोहाय। कसन बल्लो नें जमाय बेमारी चो उपाय के बनाउन, संवसार के ठगतो लोक, आपन काजे कसन करेदे? कुकुर चाबलो काट के तो नी जाने ! लोक-लाज काजे आपलो हाते उपाय-दाव करेंदे बलुन खमन ले बारा-बानी चो चेर के घोरून

खावलो। मने-मन उवाट करे कि मंय जमाय के ओखद बनाउन देयेंसे आउर "जनम फुटलो हांडी के लाख दिलो असन काट बले करेंसे" हुसनय मके बले काईं नी होय बलुन ।

दखा दिन-हपता फिटतो के पिंडरी चो मास बले भरली, बइद निको होवलो । जमाय गाँव-पारा चो लोक के ढिंढोरा पिटलो बयहा कुकुर चो बीस बादमारा उपाय । काचो तो बल्लो असन- जुगे आईग ने मुततोर नोहाय बलुन । होली दिन पाहार जितते गेली आउर मोचो सुनलो अनसर ने कुकुर चो बीस ...तीन पाहार, तीन दिन, तीन महेना नाहले तीन बरख जितलो ने बले मनुख चो देहें ने रहुआय । जिदलदांय बयहा कुकुर चो बीस देहें ने गुड़ा पाड़ली, नाहले उपकली बल्लो ने कुकुर चाबलो बीस चो उपाय डाक्टर लगे बले निहांय ।

असपताल नीलो पाछे, डाक्टर मन बले काईं करूक नी सकला । रोग जुगे जितली। बइद, ए संवसार ने इतरय दिन काजे चाउर मांगुन एउ रहे । चाउर पुरली, बइद मरलो । असने एथा-हुता काई चे बेमारी होवो, नी जानतो लोक के दखालो ने बले हुन जानकार बनुन उल्टा-सीदा उपाय देउन देसत । बेमारी उल्टा बाड़ते जाउआय। बेरा-पस्ता समया ने बइद डाक्टर लगे जाउन बयहा कुकुर चो बीस के गुचातो सुजी के मारूक बलु रतो जाले ए दिन दखुक नी पड़ती। हारक गलती करलो काजे, हुनचो जीव गेली । पनगाँव चो लोक, गाँव-पारा चो लोक, हुन दिन ले किटका टुटाउन किरिया खादला कि कोनी बले बेमारी होवलो ने सबले पहिल डाक्टर लगे नेतोर आय, सिरहा-गुनिया, पांजेयार आउर मेड़ागन्तेया लगे नेतो पलटा, लाफी ले पांय पडुन देतोर आय।

ढोढेंया सुआँग

गाँव चो सावकार, अबगो कमानी-धमानी । चारो बेड़ती पयसा चे पयसा। कमातो काजे काहांय जाउक नी लागे, बसलो लगे आनुन-आनुन पयसा धराउन देसत। पयसा, पयसा के झिकेसे। मंय फंद नी बलें मोचो सायखात दखलोर आसे कि कसन, पयसा, पयसा के झिकुआय!

सीतकार बेरा चो गोठ आय । सावकार के बसलो लगे गोटोक दिन लागली कि कमानी तो बारों महेना होयेसे, मान्तर खिडिंक आदक धरम-करम चो बूता बले करलो ने निको होती। गाँव-पारा ने मान बले बाड़ेदे आउर काचोय सांगलो हिसाप ने देहें बले निको रहेदे। होली बायले बीती के हाक देउन दुनो उवाट करला। बायले बीती सावकार चो गोठ के सुनन पेट भर हांसली आउर बल्ली- कि तुमि ...आउर उपास ? अच्छा होली लोक मन चो पुरे नी बललास! सावकार चो हांसी करतो के हुन बायले के समंजालो, आउर बल्लो कि "दख तुय हांसी नी कर। मोचो मने, पहिल खेप उपास करतो बिचार इलीसे, भगवान चो दया-मया रले कसने बले गोटोक दिन कठलाउन बले दिन काटुन देयेन्दे। आउर असन उपास, देहें काजे बले तो निको आय। गाँवकारी लोक मन मके धरमाती बले बलदे, आय कि नोहाँय ?" बायले बीती हरीक होउन बल्ली- "आले करास नाई उपास, कोन तुमचो टोंड के थापलो से। गोटोक दिन रांदा-बाड़ा ले बले मके बिसाउक होयेदे ।"

दूसर दिने सावकार कतवाल के हाक दिलो आउर गाँव चो खोर-खोर, गाँव-पारा ने हाका पाड़ुक बल्लो । कतवाल हाका पाड़लो । "सुना...सुना...सुना। गुंडरू सावकार पहिल खेप मंगरवार दिने गोटोक दिन चो उपास-पियास करेदे। गाँव-पारा चो लोक हुन दिने सावकार के दखुक जाहा। गाँव-पारा ने कोनी बले मछरी-सुकसी नी रांदा। काचोय घरे नोनेया सुकसी बले नी पोड़ाहा। सावकार चो उपास टुटातो उवाट नी करा, कोनी बले उपास टुटातो उवाट करेदे हुनके डांड भरूक पड़ेदे। सुना-सुना...सुना, सावकार कालि उपास करेदे ।"

गाँवकारी मन मनेमन उवाट करूक धरला कि जेचो लगे इतरो खावतो-पिवतो काजे आसे, आउर गदेया ने धान-पान बुरजा धरेसे, कमेया-भुतेयार गाड़ाएक आसत, हुन सावकार कसन आउर कायकाजे उपास करेसे ? जानतो लोक मन ए बले बल्ला कि सावकार चो दिन भर छेरी चपललो असन काईं-जाई खावते चे रहेसे। डंडिक बले टोंड नी थामें, हुन आजि, कसन ने उपास करतो बाट के धरलो? कोनी बल्ला सावकार चो बेटा-बेटी निहांत, होउक सके हुनचय लागुन उपास-पियास बाटे धियान गेली होति। कोनी बल्ला खुबे कमालो अदांय खिडिंक धरम-करम बले करेसे, बलुन।

पनेहारी बेरा होउन रहे, आउर सावकार घर चो पुरे गाँवकारी मन जुहुक मुरियाला। सावकार चो घर चो लोक मन समंजला कि गाँव चो धरमाती चोला आय, उपास-पियास दिने दरसन करतो काजे रूंढला होती बलुन । दखुक एतो लोक मन ने कएक झान ए दखतो काजे इला कि, उपास-पियास बेरा सावकार चो टोंड

सुखेदे कि नाईं ? नी खावलो-पिवलो लागुन हुनचो देहें-पांय कोमजेदे कि नाई? एक्केदांय लेंगटही छेरी असन दखा देयेदे तेबे? कोन तो ए दखतो काजे अमरलो कि आजि सावकार के ए जान पड़ेदे कि 'बोबो-रोटी चो मुंडी कोन बाटे होयेसे।' दिन भर उपास रलो ने भुक, कसन लागुआय, जान पड़ेदे। भुक के सावकार समंजलो जाले, आमचो असन गरीब-धुरीब चो उपरे बले खिडिंक आदक दया-मया करेदे। कुढ़ा होवलो लोक मन बरन-बरन चो गोठ गोठेयाते रहोत।

एबाटे गुंडरू सावकार सोउन उठलो आउर उठते खन बायले बीती सांगली कि आजि तुमचो उपास करतो दिन आय। ठुक्क नाय सुरता इली कि आजि उपास करूक लागेदे। कसा जिनिस खादलो असन थोतना के बनाउन लटपट जोंगड़लो खटेया ले उतरलो आउर करंजी दतुन ने दाँतपाटी के मांजलो। कसेलायेक पानी ने कावरा मन चो आंग धोवलो असन चेथी बाटले आँवसुन कान पाटी लगले अमरालो आउर हाते पानी धरून थोतना के आँवसलो। उपास-पियास ने चाहा खावलो ने चलेदे बलुन थारक गुर चो चाहा के फुकुन-फुकुन खादलो। थारक चाहा तो गुंडरू सावकार चो रोजे दिना खाए चे, आमचो-तुमचो असन बटकक चाहा तो नुहाँय। हुन तो थारक चाहा खावतो बड़े पेटेया सावकार आय। गाँव सहर ने बले जेचो घरे गुंडरू सावकार काईं बुता-भयना काजे अमरून जाओ, घर-बाड़ी चो चुआँ बले हाय बलुन देयेसे। हुनच्चय लागुन सावकार केबय, सहरे बले कायोय घरे नी जाए। अस-तस होटेल ने चाहा खाउक बसलो जाले तो नी सांगा, दखलो लोक मन बले, टोंड उघाडुन भकेयाउन दखते रसत। केबय-केबय होटेल बिता मन चो चाहा पत्ती आउर गुर बले चाहा खोआते-खोआते सरून जाए।

थारक चाहा खावलो पाछे, हाते धरलो फटई ने मुंह के आँवसलो । लटपट दोरकलो खटेया ले उठलो । परछी ने निकरतो के इलो लोक मन हात के थापुन हासुंक धरला। डुमडा, पोड़सा पेट आउर घुसरा असन निकरतो के हांसुक धरला। सावकार कुरता नी पिंदुन रहे।...होली दखतो लोक मन एक्केदांय सरपट्टा पांय पड़ुक मुरियाला। उपास-पियास चो पहिल पुन्न गोटकी पाहार ने मिरली बलुन भारी हरीक होउन बल्लो- "भले राहा रे खंगार मन, तुमचो जय होओ रे चंडाल मन" काय सांगासे ? गाँवकारी बीता मन बले सावकार चो गोड़ छिउन हरीक होवला । जेके सावकार गारी देउन आसीरवाद दिलो, हुनचो जमाय पाप धोआ गेली। झोप दखुन गाँवकारी धंगड़ी लेकीमन बले हुता अमरला। कोन तो दखुन हांसलो, कोन तो दखा-दखी पांय पड़ुन दिलो । पाछे पुछला कि आजि एथा काय होयेसे बलुन। असने एतो लोक मन पांय पड़ते गेला आउर सावकार आसीरवाद देते गेलो, बेरा बाड़ते गेली ।

असने बेर, मुंड उपरे एतो के खिडिंक घाम चड़खाली। सावकार के डंडिक रहुन सुरता इली कि आजि हुन उपास करेसे बलुन। फेर जीव चो कलबडाला । सुरता नी एओत ले गाँवकारी मन संगे भुरलुन रहे। मांझ-मांझ लागेसे बलतो के, दुय झान हात के धरून भीतरे नीला। बायले बीती झपके कसेलायक पना घोरून आनुन दिली। पना खावतो के खिडिंक चेत चेगली। खिडिंक गोठेयातो बरन चो होवलो।

आंग धोवतो बेरा होली। घर चो कमेया मन चुआँ चो पानी के झिकुन मंडाउन दिला। सावकार के एउन सांगला पानी झिकलोर आसे, झपके जाउन आंग धोआ, पाछे फेर काय पूजा-पाठ

करासे जाले करा। सावकार आंग घोवतो काजे ठग होवलो, हुन जाने कि टकर हिसाप ने आंग धोवते खन फेर भुक लागेदे, उपर ले सीतकार महेना। रोजे दिना सावकारिन भात-पेज के मंडाउन देये तेबे सावकार झपके कावरा चो फटफटलो असन आंग धोउन खाउक बसे। भात चुड्डन रहो कि काचा रहो। सावकार हारक खाउक बसलो जाले पुरे मंडालो काचा-किरला जमाय जिनिस पोड़सा पेट भीतरे उतराउन देये। जसन-तसन पेज पाहार होवतो के आंग धोउक पड़ली। आंग धोवते खन काहांय ले आनलो बीती, तीन ठान, डेढ़ हातेया लाम काकड़ी मन के धडकतो के, खिडिंक थोमना ने पानी चेगली। डंडिक रहुन कसेलायक दही ने भेलायक गुर संगे घोरून, बरखान दिलो आउर मसनी के भुंय ने ओछाउन, ओंगोछी के मुंडेसा बनाउन कुमकरन असन नाक के घोरूक मुरालो। एबाटे सावकार चो कुमकरन पाड़ मारते सांज होली। गाँवकारी इहार-जहार होते रला। सावकार के दखुक लोक मन काईं-जाईं धरून बले एओत। कोन काकड़ी, कोन केरा, कोन बेलोती आउर कोन तो नड़ेर। आनुन-आनुन सावकारिन चो बसलो पुरे मंडान देओत आउर पांय पड्डन आपलो बुता-भंयना चो बाट के धरोत।

गाय-गोहड़ी चो बेरा होवतो के जमाय गाँव चो लोक आपलो-आपलो घर चो बाट के धरला। सावकार लटपट उठलो, उठलो काय हुनके उठाउक पड़ली। सांज होली गाय गोहड़ी चो बेरा होली बलुन। उठुन सावकार आपलो देहें के नंगत उपर ले धरून खाले नजंरालो। हुनके असन लागली कि हात-पांय खिडिंक कोमजलो असन दखा देयेसे। फेर बिचारलो कि हुन एक पाहार तो

भात-पेज खादलो चे नाईं, देहें कसन नंगत रहेदे। सुरता एतो के हारक फेर भुक बाड़ली। पेट भीतरे मुसा बुलुक धरली। सावकारिन के बलतो के काकनक केरा आनुन पुरे मंडाउन दिली। सावकारिन केरा उछलाते जाय आउर मुंह भीतरे ठेगलते जाये। असने आनलो बेलोती, कमलापाक खाउन उठतो बरन होवतो के, सावकार उठुन हिंडा-बुला करूक धरलो ।

राति सावकारिन खाउन-पिउन कपाट-टाटि के ढाकुन ढुलुन दिली । आउर ए बाटे सावकार के हारक फेर भुकसुड़ी धरली। बिहान पावते भुक चो लागुन जीव काय नी जाओ बलुन, कसन करेन्दे, काय करेन्दे बलते सावकारिन के सोवलो ठान ले उठायेन्दे बलते मने बिचार इली, मान्तर सावकारिन फेर मके काचा मिरी के लगड़ेदे आउर मोचो जात के नेयेदे बलुन, खुस्सनाय आपने रांदासार ने ओल्लो आउर सिका ने ओरालो हांडी-कुंडरी के टामडुन डोबलाएक सुका चिवड़ा के निकरालो, भेलायक गुर संगे फाटलो खतड़ी के ओडुन काय निमान कुरमुर-कुरमुर खाउक धरलो । अस-तस सावकारिन चो झुमा उचटली । अंधार रात आउर सावकार चो सोवलो अंधार खोली ले कुरमुर-कुरमुर आरो के सुनुन सोवलो ठान ले उठुन बसली। काहाँय ले चोर एउन भिड़ला से बलुन, सावकारिन गोटोक दुय हातेया बड़गा धरून सावकार के खुसखुसा उठायेन्दे बलते टांमडते सावकार लगे अमरतो के काय दखेसे कि सावकार खतड़ी के ओढुन काय निमान गुड़ आउर चिवड़ा के बरखायेसे ।

सावकारिन समंजली कि लावा जीव चो मनुक केबय उपास करूक नी सके। संवसार ने पुन्न कमातो काजे उपास

करूक नी लागे। पारले मनुक चो मने होतोर आय। संवसार ने असन कितरय लोक आसत जेचो लगे दुय पाहार खावतो काजे दार-चाउर निहाँय, रतो काजे ठान निहाँय, पिंदतो काजे फटई निहाँय, मुंड उपरे छानी निहाँय, असन लोकमन काजे साहा होतोर आय। रलो लोक मन के खाउन-पिउन बले भगवान चो सुमरना करतोर आय आउर जेचो सकत आसे हुन नी खाउन बले उपास-पियास करूक सके मान्तर सावकार चो ढोढेंया सुआँग असन नाईं।

टेकाहा

कएक हार नानी-नानी पिला-झिला मन, असन टेक करून देसत कि मांय-बाप बले हुन मन के मनाउक नी सकत। मांय-बाप चो लाड़-दुलार बले केबय-केबय पिला-झिला के टेकाहा बनाउन देसत। सियान सजन मन बललासत कि "तिल बाड़ी ने हागा नाईं, आउर पिला मन संगे लागा नाईं" बलुन।

असने होली गोटोक नानी असन पाठ पड़तो पिला गोटोक दिने टेक करलो, ...बल्लो मंय बिसई टेंडकी खायेन्दे। घर चो लोग समंजाला, कि नाईं ...बिसई टेंडकी ने बिस रउ आय आउर खावतो लोक पाछे मरून जाउआत बलुन। मान्तर टेक तो टेक आय। टेकाहा पिला नी मानलो। गाँव-पारा चो लोक मनाउन दखला पाछे सोर होला कि नाईं एचो पाठ पड़ातो गुरूजी के हाक देउन दियास कोन जाने हुनचो गोठ के मानेदे बलुन। कएक लोक तो बल्ला कि काय पाठ पड़ायेसे गुरूजी, असने सिखालो जाले तो होलि !

थाकुन-फुकुन गुरूजी के हाक दिला, गुरूजी इलो । गुरूजी गोठ के डंडिक सुनलो आउर बल्लो असन टेकाहा मन के मंय सुधराउक जाने, डंडिक ने दखा कसन मोचो गोठ के मानेदे दखते राहा, काहांय नी जाहा बलुन।

गुरूजी गोटोक बिसई टेंडकी के धरून आनतो काजे बल्लो। तुरते गोटोक बिसई टेंडकी के थापुन आनला। गोटोक दोना ने मंडाउन भाति लेका चो पुरे मंडाउन दिला, आउर गुरजी लेका के बल्लो ...एदे बिसई टेंडकी आनुन दिलु कसन खाउआस जाले खा ।

लेका फेर टेक करलो- नाईं असने नी खाएं, ...एके भाजुन आना। गुरूजी घर चो लोक के भाजतो काजे बल्लो आउर भाजुन बले आनुन दिला। लेका फेर बदललो, आउर बल्लो- नाईं मंय गुला नी खांय, आधो के खायेन्दे। बिसई टेंडकी के दुय गोंदा करला आउर लेका चो पुरे मंडाउन दिला। लेका फेर बदललो, गुरूजी बाटे आईंख उलटाउन गुरूजी के बल्लो-"नाईं गुरूजी तुय मोचो पाठ पड़ातो मास्टर आस, तुय मोचो ले बड़े बले आस, आघे तुय खा। मरलो पाठ पड़ातो गुरूजी। आईंख-कान लिमटुन, थोतना के बाकटा बनाउन आउर टोडरा के अलटुन जसन-तसन गुरूजी टेकाहा चो पुरे गोटोक गोंदा के गिललो, आउर पांचेक गिलास पानी के खावलो।

गुरूजी चो गिलते खन लेका आउर जोड़ करून गागुक मुरियालो। गुरूजी बल्लो ...अबर काय होली? मंय तो तुचो बल्लो लागुन गोटोक गोंदा के खादले, अबर तुय खा। लेका फेर बदललो, आउर जोड़ ने गागुक धरलो आउर बल्लो - तुमि तो हुनि गोंदा के खादलास जेके मंय खावतो लोक रयें अबर मंय काय के खाउआंय ? बलुन आउर जोड़ ने गागुक धरलो।

गुरजी समंजलो, ए लगे डंडिक आउर रले जाले मोचो जात के तेल चेघायेदे, आउर बाचलो दुसर गोंदा के बले मके चे खोआउन देयेदे, भले मनुक के बयहा बले बनाउन देयेदे। आपलो पिंदलो धोति के धरसकल दुनों हाते सकलुन कन्हेया ने खोचलो सरपटा पांय पड़लो आउर बल्लो नी होय तुके, आउर तुचो जनम देतो मांय-बाप के । ...बलते इलो बाटे जाते गेलो । "पिलाबाय बुयबाय" एकय बलुआत।

ढुलढुलेया बांगा

धान कटई सरली, कुपा बले रचुन दिलुं। फाबलो लोक मन जेचो लगे फाटलो-तुनलो जाल आसे हुन बिहानत ले लावा धरूक निकरला। सांज बेरा इलो ने कोन तो लगे गोरसी धराउन पिला-पिचका मन संगे पोड़ाउक भिड़दे बे। आमचो गाँव-पारा ने असने आय। कोन लगे सरसुन भाजि, कोन लग चो चना भाजि, उसका कांदा, डांग कांदा आउर घत भिड़ली जाले तो कोचई संग चो लावा। गोटोक पाहार बले तो साग के थामेसे चे। माहांग दिन चो साग, काहांय ले मिरो आउर आमचो पेट बले भरो। मान्तर आमि जानुं कि मसागत नाहलो, मुसा मास खाउक नी मिरे बलुन।

जुगे करून पान दुकान नाहले चाहा दुकान ने फोकटेया गोठ लमातो लोक मन जुगे रहुआत आउर संवसार चो आनि-बानि सोरा चानि चो गोठ के झोकते-पकाते रहुआत। हुनमन घरे काय होयसे हुनके नी जानोत, मान्तर काचो घरो लेकी काहां जाउन रये, काचो संगे कोन भिड़लो से, कोन नेता बनलो, काचो बायले पराली, ...असन लड़ानी गोठ के गोठातो लोक खुबे मिरदे।

आजि निकरली बांगा चो गोठ। एक झान बल्लो साग मांदि ने राजा बल्ले बांगा। बांगा असन साग नोहाय! जुगे करून आमि देसी बांगा के आउर नांव के बले जानुं। मान्तर एचो बले हाइब्रिड बनाला, आउर काय छुत धरली जाले आमचो देसी बांगा हाट ने दखा नी देये। दूसर बल्लो- आमचो देसी बांगा बल्ले हाट-पटन ने

काय सुंदर आउर सुकाल। आजिकालि दखा बिन सोर चो बिदेसी बांगा, हुन बले रांदले सुआद नाईं ना रंग नाईं।

गोटोक बांगा के सुरता करून सांगलो- "आघे आमि बले हडरी जाउं आउर किसम-किसम चो बांगा के आनुं।" हात चो अंडखी मन के गनते सांगलो- "एदे गोटोक होयेसे ढुलढुलेया बांगा, दुसर सिंगि बांगा, ठिरली बांगा, लामड़ी बांगा, करेया बांगा, काटा बांगा, करेया बांगा, जोकड़ी बांगा, काबरी बांगा।" गोटोक झोकलो आउर बल्लो- "मांढो बांगा, भेजरी बांगा, कंवरी बांगा, जुरलो बांगा, पाकलो बांगा, उमलो बांगा, सुकलो बांगा, झड़लो बांगा, लुथरलो बांगा, किड़ही बांगा, टांट बांगा, पिचकलो बांगा आउर सरासरी कुहलो बांगा।" ठिया रलो लोक मन डंडिक पेट के धरून हांसला।

सत्ते आय साग मांदि चो राजा बल्ले बांगा। कांई बले आमट-झिमट होओ, नाहले सुखा साग होओ, नाहले बांगा-झुंड़गा आमट होओ, बांगा भाजा होओ, पोड़ातो बाटे होओ ...बांगा सपाय बाटे भिड्डुक सके। हाट-बजार ने दूसर साग-भाजि कितरो बले माहांग होओ असन माहांग बेरा बांगा साग खिडिक सुकाल चे रहेंदे। बांगा के बाखनतो लोक मन नी, जानोत कि एई बांगा के खाउन-खाउन कितरय लोक मन नेता, सावकार, खेलाड़ी, गीतकुरिया, नाटकुरिया आउर मास्टर पंच-सरपंच बनला। बांगा चो लागुन कएक लोक चो नांव बले बांगापालिन आउर बांगा खाउ नांव पड़ली। गाँव चो नाव होली 'बांगापाल'। आमचो देस ने दार माहांग होली, चाउर माहांग होली, गहूं माहांग होली, साग मांदि ने बले जमाय साग माहांग होली। मांडो बांगा साठ रूपिया किलो, गोंदरी गोटोक किलो के पांच कोड़ि रूपिया। काय के खावतोर आय आउर काय के खजातोर आय?

पहिल खेप बांगा चो बीज बनातो आउर उपजातो लोक के सयसरन पाँय पडुंसे। असन भायगमानी लोक आमचो भारत देस ने सपाय जुग ने जनम धरोत। महापरभु असन लोग के जुगे सकत, बुद्धि आउर बल देओ । हाइब्रिड बांगा चो पलटा देसी बांगा चो उपज जुगे करूक होओ । मँय तो बलेंसें कि देसी बांगा के आमचो देस ने इतरो उपजाओत कि काहाँय बले दखलो ने देसी बांगा चे बांगा दखा देओ । इतरय नाईं, गरीब-धुरिब चो डोबला-पतरी ले धरून, परधान मंतरी आउर राष्ट्रपति चो थारी ने बले देसी बांगा चो साग होओ। सांसद आउर विधायक मन चो थारी ने बांगा साग अमरो। आमचो मंतरी मन बले बिचार करोत कि छत्तीसगढ़ के जसन धान चो बटका बनाला आउर हुनचो लागुन गरीब परिवार के एक रूपिया किलो चाउर मिरूक धरली, हुसनय बस्तर राज के बले एसिया चो सबले बड़े "बांगा बाड़ी" बनावाँ। इतरो बांगा कमावाँ इतरो बांगा कमावाँ कि गोठ-गोठ ने बाहरेया आमके "बांगा सावकार" बलोत।

दईब चो असन दया-मया होलि जाले तो काय के सांगासे ता- फेर सरकार बाटले कोनी खेल काजे "बांगा खेल पुरस्कार" बले देउक होयदे। घरे इलो सगा के बांगा चो बारा बानि चो साग जसन- बांगा आमट, बांगा भाजा, बांगा ठेचा, बांगा रूचा, बांगा बड़ी, बांगा झुंड़गा आउर असने काईं-जाईं। लेकी मन रोजे नावा-नावा रेसिपी सिखुन भाति नावा-नावा साग खोआता। सगा बोहड़तो बेरा गोटोक तुआल ने सगा मान काजे बांगा बांदुन देतु। पंच-सरपंच, पटवाड़ी जनाप नाहले गराम सेवक लगे काईं बुता रले बांगा अमरान देतु। सुजी मारा डाक्टर इलो ने बले पहारक रांदा काजे बांगा टुटाउन झोरा ने भरून अमराउन देतु।

आले इतरो माहांग दार-साग, गोंदरी माहांग होली जाले तो असन बिचार करूक लागेदे। कोनि चुनाव जितुन इले देसी बांगा चो माला पिंदाउन परघाउक होती। आमचो सहर चो ढाबा आउर होटेल ने देसी बांगा चो गोटोक साग जरूरी होतोर बनावाँ।

गाँव-पारा ने नियम बनावाँ, काचोय घरो लेका-लेकी चो छटि होलो ने बांगा टिकतोर आय। नांव देतो बेरा बांगा टिकतोर आय। जनम दिन मनातो बेरा बांगा टिकतोर आय। माहला घरे गेलो ने बांगा टिकान अमरान देतोर आय। बिहा-टिका ने दाईज संगे-संगे बांगा चे टिकतोर आय। मरनी घरे बले बांगा धरून जातोर आय। देवगुड़ि गेलो ने नढ़ेर चो पलटा फूल आउर बांगा चेघातोर आय।

बेड़ा-खाड़ा ने भुती पलटा पयसा नी देउन बांगा देतोर बनावाँ। नाट दखुक गेलो ने मेंटल मारतो बेरा पयसा चो पलटा बांगा के मेंटल मारतोर आय। गाँव-पारा ने रांदलो साग देतो धरतो बेरा बांगा साग चो पलटा बांगा साग देतोर बनावाँ।

सहर चो जितरो बले रंगकरमी, नाटकुरिया, नाटगुरू, साहितकार, संस्कृति करमी मन के, नाहले कयेक बरन चो इनाम देतो बेरा नढेर आउर गोटोक साल देतो नियम बनाला से हुसनय, हुता गोटोक साल आउर बांगा देतोर बनाओत। सरकारी करमचारी मन के बोनस चो संगे-संगे ने बांगा चो गोटोक-गोटोक पाकिट देतोर बनाओत। एचो ले आमचो बांगा संस्कृति चो बाढती होयेदे।

आमचो रोजे दिन चो जिवना-खावना ने कितरो बरन चो मिसालो अडरा तीजमन के रोजे खाउंसे आउर देहें-पाँय के बेमार बनाउंसे। मनुख मांदी ने आजि दूसर ले धरून तीसर मनुक

बेमार आसे। कित झान के सक्कर बेमारी, जीव धड़धड़ातो बेमारी, आउर कएक बानी चो गुलाय बेमारी। गोबरखत ने उपजावलो साग-भाजी के खावतोर बनावा, साग-पान ने तो निरवाँ बांगा चे नंगत आय, कसन ? बांगा खावलो ने कएक बरन चो बेमारी बले उजरेसे, हुनी काजे बलुक लागेदे- देसी बांगा खाहा आउर देहें के जतनाहा।

कमानी ले आगर खरचा

बिहान पावली, बेर निकरली आउर गुलाय दिन कुकुर असन भुकरते बुलुन-बुलुन रलो, दिन बुड़ली मान्तर काहाँय भुति मिरली ना भात। साँज होवतो बेरा उतरालो थोतना के धरून घरे जाओ कि नी जाओ जाले बलुन बिचार करते घर चो बाट के धरलो बीजापुरिया चो नाती लेका लुदर। मान्तर गाय-बयला असन ठुकठुक्का घरे गेले बले तो मोचो देव के तेल चेगादे। दिन बुड़ली कमानी ना धमानी, घरे आजि चो रांदा काजे साग-पान निहाँय, चुच्छाय हाते घरे गेले जाले दिया धरादे नाहले मिरि के बले लगड्डुक सकदे बलुन, अंधार होवतो पुरे हाट ने ओलुन काईं-जाईं घेनेन्दे बलुन गेले, मान्तर जमाय बानी के जोय धरली से। काईं के होओ चालीस रूपिया किलो, साठ रूपिया किलो। कुंदरू जसन साग के बले साठ रूपिया किलो। आले सांगा जेचो पाँच ठान बेटा-बेटि आसत जाले हुन आपलो पेट के पोसुआय कि पिला-झिला चो पेट के पोसुआय। जितरो चो कमानी नाईं हुनचो ले आगर खरचा।

सरासरी हाट रये गोटोक कोचनीन दुय झुड़ी मुरा के धरून बसु रये। आउर मके दखान बल्लो- सरासरी आय मुरा, नेओ। दुय झुड़ी के दस रूपिया ने देता हय बल्लो। अच्छा सुकाल मुरा के भेटले बलुन, लगे जाउन दखेंसे जे, खिडिंक कोमंजलो असन, एक दुय ठान मुरा के टुटाउन चाखुन दखतो लोक चो बाचलो मुरा। मँय बिचार बले करले असन मुरा के घरे निले बायले बिति बले बकेदे, काहाँ ले मांगुन आनलास काय? कि झिकुन

आनलास, हुन झिकाखाया मन चो चाल करलो असन बलुन । ठुक्कनाय सुरता करून पुरानी-झुरानी संगे जातो बेरा चो पाड़ आउर सुकाल मिरेसे बलुन धरून निले ।

घरे अमरतो के रोजे दिना असन सात पुरखा के सरापली । झोरा के मंडान भाति हात-गोड़ धोउन सीत दिन आय बलुन गोरसी के धराले आउर बसले। निहाँय पिला-झिला मन झुमला बाबा इलो, बाबा इलो । खावतो खाजा आनलो बलुन। हात ने काईं दमड़ी धरा पड़ले तो काईं आनेदे बाप बिता बले ? एथा दिन भर चामड़ी निकरून जायेसे मान्तर दामड़ी नी धरा देये। टोंड के आंवसुन पिला मन के भुलकातो चाल करेन्दे बलुन गोटोक के कचकाले जा रे रेडियो बाजा के आन ! आजि पाकलू सियान गुड़िया खाजा धरून एउआय हुनके मांगवाँ खाजा-चरबन । गोटोक धोकड़ते उठलो आउर रेडियो बाजा के भीतर ले चे बजाते बाहरे आनलो । जमाय लोक गोरसी लगे बसला हुदलयदांय छत्तीसगढ़ी भासा चो गोटोक गीत बाजते रये, छत्तीसगढ़ी चो लागुन हुन गीत जुगे ले जुगे समजुक नी होते रये। नी जानलो लागुन बले पिला मन गीत चो संगे गाउन बले दखोत । मँय बले गीत के जुगे करून नी समंजे, काय काजे बल्ले मँय छत्तीसगढ़ी गोठेयाउक नी जानें, मँय तो ठेठ बस्तरिया हल्बी के जानें, मान्तर जेके मँय समंजले हुन असन रये -

चना चो दार राजा,
चना चो दार रानी,
चना चो दार गोंदरी, अलटेसे,
पिला आय परबुधिया

होटेल ने भजेया धड़केसे ।

असन छत्तीसगड़ेया गीत दुय-तीन दिन चो आड़ ने आमचो रेडियो ने बाजे चे । मके ठुक्कनाय सुरता इली कि तीस बरख चो पूरे आमचो गाँव कार्यकरम ने बाजतो गीत मन काहां हाजली ? आजिकाली हुसन गीत मन सुनुक नी मिरे।

बसलो लगे थोतना ने हात देउन बिचार करेंसें कि तीस बरख पूरे आमचो छत्तीसगढ़ राज नी बनु रहे । हुदलदांय आमि मध्य परदेस राज ने रलूं । एबे सोरा सोरा भरली आउर सतरा लागली, नांवा छत्तीसगढ़ राज बनलोर। छत्तीसगढ़ सरकार जनवरी दुय हजार चवदा ले गरीब-धुरीब के एक रूपिया किलो चाउर देतो उवाट करलीसे । दुय रूपिया किलो चाउर आउर दस रूपिया किलो चनादार आघे ले चे देउक मुरियाउन रये, बल्लो ने आघे बारा रूपिया ने रोजे तिहार मनाते रलूं, अदांय ग्यारा रूपिया ने तिहार मनाउंदे । आमि बस्तरिया भात संगे आमट-झिमट नाहले कांदुल दार, उड़िद झुंड़गा, छाती-बोड़ा आउर राखड़ी दार के खाउंन-खाउंन मेंछा संगे चुंदी के अंकरालुं । चना आउर चनादार आमचो बस्तरिया हिसाप ने भात दार संगे कम आउर चाखना संगे जुगे करून खाउआत, ए गोठ के सपाय मतवार संगवारी मन जानोत ।

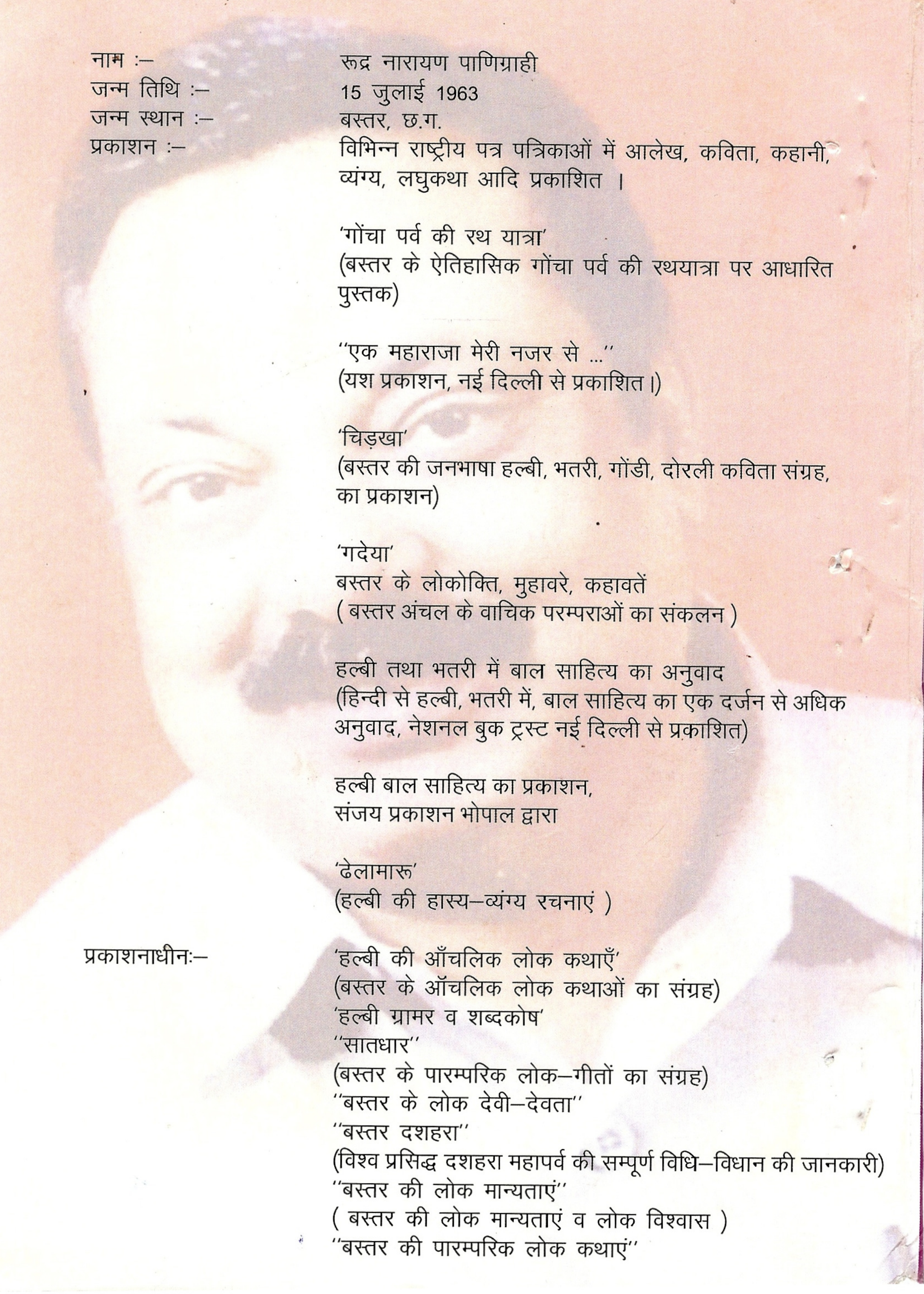

नाम :— रूद्र नारायण पाणिग्राही

जन्म तिथि :— 15 जुलाई 1963

जन्म स्थान :— बस्तर, छ.ग.

प्रकाशन :— विभिन्न राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में आलेख, कविता, कहानी, व्यंग्य, लघुकथा आदि प्रकाशित ।

'गोंचा पर्व की रथ यात्रा'
(बस्तर के ऐतिहासिक गोंचा पर्व की रथयात्रा पर आधारित पुस्तक)

"एक महाराजा मेरी नजर से ..."
(यश प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित।)

'चिड़खा'
(बस्तर की जनभाषा हल्बी, भतरी, गोंडी, दोरली कविता संग्रह, का प्रकाशन)

'गदेया'
बस्तर के लोकोक्ति, मुहावरे, कहावतें
(बस्तर अंचल के वाचिक परम्पराओं का संकलन)

हल्बी तथा भतरी में बाल साहित्य का अनुवाद
(हिन्दी से हल्बी, भतरी में, बाल साहित्य का एक दर्जन से अधिक अनुवाद, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली से प्रकाशित)

हल्बी बाल साहित्य का प्रकाशन,
संजय प्रकाशन भोपाल द्वारा

'ढेलामारू'
(हल्बी की हास्य—व्यंग्य रचनाएं)

प्रकाशनाधीनः— 'हल्बी की आँचलिक लोक कथाएँ'
(बस्तर के आँचलिक लोक कथाओं का संग्रह)
'हल्बी ग्रामर व शब्दकोष'
"सातधार"
(बस्तर के पारम्परिक लोक—गीतों का संग्रह)
"बस्तर के लोक देवी—देवता"
"बस्तर दशहरा"
(विश्व प्रसिद्ध दशहरा महापर्व की सम्पूर्ण विधि—विधान की जानकारी)
"बस्तर की लोक मान्यताएं"
(बस्तर की लोक मान्यताएं व लोक विश्वास)
"बस्तर की पारम्परिक लोक कथाएं"